स्वामिनारायण प्रकाश

सदस्यता शुल्क ₹. 60/-
अक्टूबर, 2021

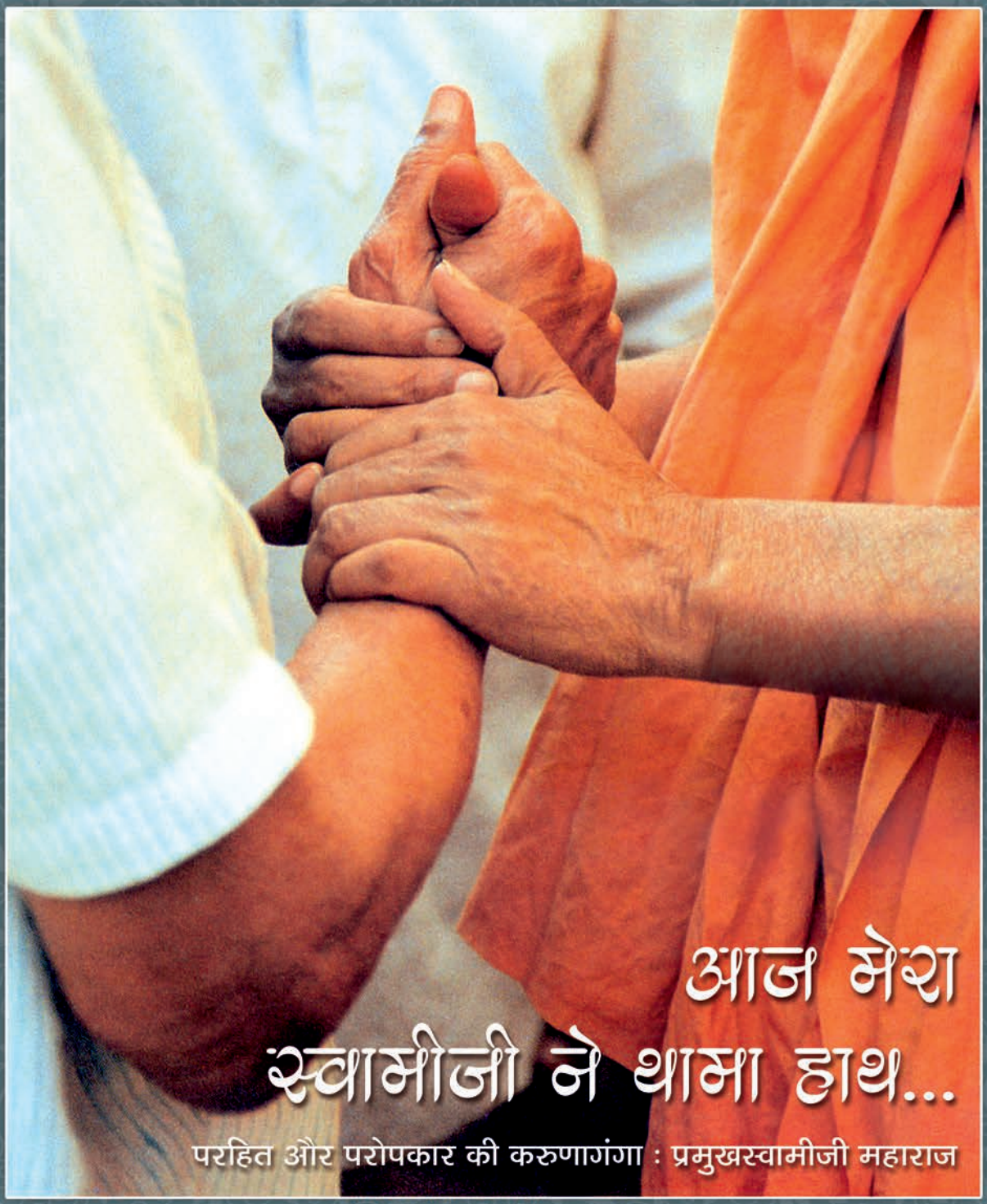

आज मेरा स्वामीजी ने थामा हाथ...

परहित और परोपकार की करुणागंगा : प्रमुखस्वामीजी महाराज

सुरेन्द्रनगर और भुज में नए बी.ए.पी.एस. मंदिरों के परिसर में स्वामीजी के हाथों शिलान्यास विधि संपन्न...

हाल ही में, परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के कर-कमलों द्वारा सुरेन्द्रनगर और भुज में निर्माणाधीन भव्य शिखरबद्ध मंदिर परिसरों के शिलान्यास समारोह संपन्न हुए।

इस अवसर पर स्वामीजी ने 27-8-2021 को सुरेन्द्रनगर और 2-9-2021 को भुज मंदिर परिसर की शिलाओं की पूजा की एवं सुरेन्द्रनगर और भुज के संतों और भक्तों पर आशीर्वाद बरसाया।

10-9-2021 को गणेश चतुर्थी के अवसर पर स्वामीजी ने श्री गणेश जी का भी पूजन किया।

जिनकी आंखों से अविरत छलकता था करुणा का महासागर

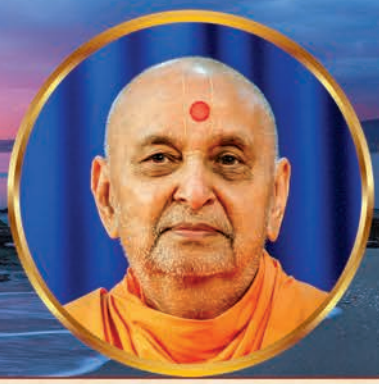

अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी ने एक मार्मिक बात कही है:
'भगवान की दया अपार है। उनकी ही दया हर जगह पहुंची है।' (स्वामी की बातें 1/175)
दया परमात्मा का सीमातीत गुण है। भगवान श्रीराम को संबोधित करते हुए अयोध्या के नगरवासी कहते हैं:
'हेतु रहित जग जुग उपकारी... '
अर्थात् हे प्रभु! आप और आपके संत अकारण नि:स्वार्थ उपकार करते हैं।
दया या परोपकार के महत्व को समझने वाले विद्वानों ने व्यासजी द्वारा लिखे गए अठारह पुराणों का सारांश इस प्रकार दिया है:
अष्टदशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्॥
अर्थात् व्यासजी द्वारा रचित अठारह पुराणों का सार केवल इन दो वचनों में आता है: पुण्य के लिए परोपकार करना और पाप के लिए दूसरों को पीड़ा देना।
रामचरितमानस में तुलसीदासजी भगवान श्रीराम के मुख में ये शब्द डालते हैं: परहित सरिस धर्म नहीं भाई! (उत्तरकांड, 46)
तुलसीदासजी एक चौपाई में करुणा को धर्म का मूल कहते हैं : 'दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।'
भारतीय संस्कृति ने विश्व को दया-प्रेम-करुणा के ऐसे अनेक उदाहरण दिए हैं।
श्रीमद्-भागवतम् के नौवें स्कंध में वर्णित रंतिदेव राजा की कहानी दया और करुणा के एक ऊंचे शिखर को दर्शाती है। रंतिदेव एक दानी और दयालु राजा थे। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति लोगों की पीड़ा को कम करने के लिए समर्पित कर दी थी। अंतत: वह बेसहारा होकर अपने परिवार के साथ जंगल में भटकते रहे। एक समय था जब लगातार 48 दिनों तक उनको खाना या पीना कुछ नहीं मिला। 49वें दिन उन्हें कुछ खीर और पानी मिला, लेकिन उसी समय अतिथि के रूप में भोजन की याचना करने पर एक ब्राह्मण को अन्न दे दिया। फिर अन्न का कुछ हिस्सा एक शूद्र भूखे अतिथि को दे दिया। तो तीसरा मेहमान कुत्ते के साथ आया। वह भी खाने की उम्मीद कर रहा था। रंतिदेव ने उन्हें बचा हुआ खाना दे दिया। रंतिदेव की ऐसी परोपकारिता देखकर स्वयं भगवान प्रकट होकर उन पर प्रसन्न हुए और वरदान मांगने के लिए कहा। तब रंतिदेव कहते हैं कि मुझ राज्य संपत्ति या मुक्ति भी नहीं चाहिए। मुझे इतना दीजिए कि सभी के दुख मैं मिटा सकूं।
ऐसे उदाहरण विश्व में दुर्लभ हैं। जब किसी व्यक्ति का हृदय दया, करुणा, परोपकार या सहानुभूति की सच्ची भावनाओं से भर जाता है, तो वह नि:स्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा कर सकता है। मनुष्य अपने हृदय में करुणा के साथ दूसरों की ऐसी नि:स्वार्थ सेवा करने से ही महान बनता है, शक्ति या धन से नहीं।
मार्टिन लूथर किंग(जूनियर), एक अमेरिकी धर्म गुरु और सार्वजनिक नेता, जिन्होंने अमेरिकी राजनीति में महत्वपूर्ण प्रगति की है, कहते हैं:
'हर कोई महान हो सकता है, अगर वे दूसरों की सेवा कर सके। करुणा से दूसरों की सहायता करने के लिए किसी महाविद्यालय के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं है, व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उसके लिए आपके पास दो चीजें होनी चाहिए - एक कृतज्ञता से भरा हृदय और एक प्रेम से भरी आत्मा।'
संक्षेप में, दयालुता पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों का एक अनिवार्य गुण है। केवल दया ही इस धरती पर सभी के लिए सुख और शांति ला सकती है।
दया, करुणा, परोपकारिता, उपकार, परसुख आदि एक दूसरे के पर्यायवाची हैं, लेकिन इसका असली पर्याय भगवान और संत हैं!

जीवों में करुणा की मात्रा थोड़ी-बहुत हो सकती है, लेकिन करुणा का गुण पूर्ण और सोलह कलाओं में वहीं मिलता है, जहां स्वयं भगवान या उनके अखंड धारक संत होते हैं।

भगवान श्री स्वामिनारायण दया और करुणा की साक्षात् मूर्ति थे। वास्तव में, इस धरती पर उनका प्रकट होना उनकी सबसे बड़ी करुणा का उदाहरण है। उनकी दया और करुणा पूरी तरह से रामानंद स्वामी से की गई प्रार्थनाओं में पेश की जाती है, जब उन्होंने केवल 21 वर्ष की आयु में संप्रदाय के धर्मधुरा को संभाला था। उन्होंने कैसा मांगा:

'अगर किसी भक्त के भाग्य में बिच्छू के डसने का दर्द लिखा हो तो भक्त के बदले वह दर्द मुझे कई गुना हो जाए, लेकिन भक्त को कोई दर्द नहीं हो। और अगर भक्त के भाग्य में रामपात्र लेकर भीख मांगना लिखा हो तो वह रामपात्र मेरे भाग्य में आए, लेकिन भक्त को अन्न वस्त्र के लिए कोई दु:ख न हो।'

भगवान स्वामिनारायण विचरण करते जगन्नाथपुरी में आए तब वे केवल 15-16 वर्ष के थे। वे नीलकंठ वर्णी के वेश में जगन्नाथपुरी में इंद्रद्युम्न सरोवर के पास रह रहे थे, तो कुछ वैरागी बावा ने उन्हें सब्जियां ले आने के लिए कहा। तब वे बोले कि 'वनस्पति में तो जीव होता है, वह मैं नहीं तोड़ सकता।' यह उनकी दया की पराकाष्ठा है।

इसी दयालुता के कारण ही उन्होंने 15-16 वर्ष की आयु में एक अज्ञात बीमार साधु सेवकराम की सेवा का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। वे वचनामृत में कहते हैं:

'हम वेंकटाद्रि से सेतुबंध रामेश्वर जा रहे थे, तब वहां रास्ते में सेवकराम नाम का एक साधु मिला। उसको लहू मिश्रित पेचिश हो गई थी अत: वह रोने लगा। तब हमने उससे कहा, 'चिंता मत करो, हम तुम्हारी सेवा करेंगे।' फिर हम उस साधु को बड़े बरगद के पेड़ के नीचे बसेरा कराया। एक बाड़ी से केले के पत्ते काटकर लाए और उसे एक हाथ ऊंचा बिस्तर बनाकर उस पर लिटा दिया। उस साधु का खून से लथपथ वस्त्र हम धोते, और साधु जितना चाहिए उतना चीनी, घी, आटा सब अपने पैसे से हमारे पास मंगवाया करता था। हम भोजन पका कर उसे खिलाते थे। हम तो बस्ती में जाकर भिक्षा मांगते और खाते थे। कभी-कभी तो भिक्षा नहीं मिलने पर हमें उपवास भी होता था। लेकिन एक बार भी उस साधु ने हमसे कभी नहीं कहा, 'हम दोनों के लिए भोजन पकाओ और आप भी साथ में खाना खाओ।' साधु दो महीने में ठीक हो गया।' (वचनामृत गढड़ा प्रथम प्रकरण 10)

एक चीनी सम्राट ने एक बार महात्मा कन्फ्यूशियस से पूछा: 'सबसे बड़ा कौन है?'

कन्फ्यूशियस ने कहा: 'आप सबसे महान हैं।'

सम्राट ने पूछा: 'क्यों?'

महात्मा ने कहा: 'क्योंकि तुम सत्य जानने के लिए उत्सुक हो।'

राजा ने पूछा: 'लेकिन क्या मुझसे बड़ा कोई है?'

महात्मा ने कहा: 'हाँ, मैं हूँ।'

'कारण?'

महात्मा ने कहा: 'क्योंकि मुझे सत्य से प्रेम है।'

सम्राट ने पूछा: 'और क्या तुमसे बड़ा कोई है?'

कुछ ही दूर कुआँ खोदने वाली एक बूढ़ी औरत की ओर इशारा करते हुए उसने कहा: 'यह बूढ़ी औरत मुझसे भी बड़ी है, क्योंकि वह दूसरों के लिए कुआँ खोद रही है। श्रेष्ठ वह है जो स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि दूसरों की मदद करने या दूसरों के दुख को कम करने के लिए काम करता है।'

ब्रह्मस्वरूप प्रमुख स्वामीजी महाराज उस कक्षा पर विराजित थे। वे सत्य को

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

गुणातीतोऽक्षरं ब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः।
जनो जानन्निदं सत्यं, मुच्यते भवबन्धनात्॥

स्वामिनारायण प्रकाश

वर्ष : 39, अंक : 10,
अक्टूबर, 2021

संस्थापक : ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज
सम्पादक : साधु स्वयंप्रकाशदास
प्रकाशक : स्वामिनारायण अक्षरपीठ,
शाहीबाग, अहमदाबाद – 380004.
यह पत्रिका प्रतिमास 10 दिनांक को प्रकाशित होती है।
शुल्क : वार्षिक सदस्यता शुल्क : रू. 60/–
यह पत्रिका नियमित रूप से डाक द्वारा प्राप्त करने के लिए शुल्क मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट 'स्वामिनारायण अक्षरपीठ' के पक्ष में प्रकाशक के पते पर भेजें। किसी भी मास में सदस्य बन सकते हैं।

सम्पादन विषयक पत्रव्यवहार :
prakash@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' संपादन कार्यालय,
स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद – 380004.

सदस्यता विषयक पत्रव्यवहार:
magazines@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' सदस्यता कार्यालय,
स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद – 380004.

website :
www.baps.org
magazines.baps.org

जानते थे, वह सत्य से प्रेम करते थे, इतना ही नहीं, आत्मा और परमात्मा के साक्षात्कार के बावजूद जीवन भर छोटे से छोटे व्यक्ति की पीड़ा को कम करने के लिए कड़ी मेहनत करते थे। उन्होंने पीड़ा और कष्टों को सहन करके खुद को दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था।

जिन लोगों ने प्रमुखस्वामी महाराज को देखा है, उन्होंने अपने प्रत्येक क्षण उनमें रंतिदेव को महसूस किया है। जीवन भर दूसरों के कष्टों को दूर करने के लिए स्वामीजी ने दूसरों की कठिनाइयों को अपने सिर पर ले लिया था।

एक बार बोचासन में, किसी ने प्रमुखस्वामी महाराज से पूछा: 'यदि आप पूरे दिन लोगों के दुःखों को दूर करते हैं और लोगों की समस्याओं का समाधान करते हैं, तो आप भजन कब करते हैं?'

प्रमुखस्वामी महाराज सहज भाव से बोले: 'हमें अखंड भक्ति है, हम प्रत्येक क्षण भगवान को याद करते हैं। लेकिन साथ ही हम समाज का ख्याल रखते हैं। हम साधु बने हैं – पीड़ितों के कष्ट दूर करने के लिए!'

यह थी प्रमुख स्वामी महाराज की अपार करुणा! यही उनके जीवन का लक्ष्य था!

1998 में उनके पास एक असाधारण घटना घटी। 15 जुलाई का दिन था। प्रमुखस्वामी महाराज की गंभीर हृदय बाईपास सर्जरी को एक सप्ताह हो गया था। दोपहर के विश्राम के बाद जब स्वामीजी उठे तो सेवकों ने मंद प्रकाश में देखा कि स्वामीजी का बिस्तर, तकिया, गलीचा, धोती, चादर सब खून से भीग गया था। सब चौंक गए। जांच से पता चला कि पेट की सर्जरी के दौरान डॉक्टरों ने छाती के निचले हिस्से में ट्यूब डाली थी, जिसमें दाएं वेंट्रिकल से लाल तरल पदार्थ की एक धारा बह रही थी। सेवक ने फौरन स्वामीजी के गीले कपड़े बदलवा दिए। सब फोन पर बिजी हो गए। डॉक्टरों के निर्देश पर एक्स-रे लेना तय हुआ।

सभी चिंतित थे, लेकिन स्वामीजी स्वस्थ थे। छह बजे तक कई क्लीनिक बंद हो चुके थे। अंत में एक डॉक्टर का क्लीनिक खुला था, वहां पर स्वामीजी को ले जाने का निर्णय लिया गया। करीब एक घंटे बाद स्वामीजी न्यूयॉर्क के क्वींस इलाके में स्थित स्पोर्ट्स मेडिसिन एंड फिटनेस सेंटर पहुंचे। यहां अमेरिकन ओपन एमआरआई सेन्टर में डोक्टरों ने एक्स-रे निकाल लिया और पाया कि पेट में अभी भी लगभग 1000 सीसी पानी था। डॉ. सुब्रमण्यम जी से फोन पर परामर्श किया, जिन्होंने हाल ही में स्वामीजी की हृदय की बाईपास सर्जरी की थी। उस समय एक्स-रे विभाग में बैठे स्वामीजी के कपड़े छाती के निचले हिस्से से बहने वाले खून से फिर से भीग गए। पहनावा वहीं बदल लिया गया। स्वामीजी के शरीर में हल्का बुखार भी था। उनके शरीर में कितनी वेदना होती होगी उसकी कोई कल्पना नहीं की जाती थी।

ऐसी परिस्थितियों में, इस विशाल प्रयोगशाला के भारतीय मालिक चाहते थे कि स्वामीजी अपने अन्य विभागों में पदार्पण करें। सेवक तो मना कर रहे थे, लेकिन स्वामीजी ऐसी परिस्थितियों में भी पधरावनी के लिए तैयार थे। उन्हें व्हीलचेयर पर बिठाकर एक के बाद एक कमरे में ले जाया गया। आखिरी कमरे में ठाकोरजी को एम.आर.आई. की विशाल मशीन पर विराजित किया गया। फिर स्वामीजी स्वयं 'जय महाराज... स्वामी...' बोलते हुए धुन करने लगे। अनायास ही बरसने लगी शुभ संकल्पों की करुणा : 'जो कोई यहां आए वह रोगमुक्त होकर वापस लौटे, सबको अच्छा हो जाए!' ऐसी असहनीय स्थिति में भी वे दूसरों के लिए प्रार्थना करने लगे। वहां उपस्थित सभी लोगों के हृदय स्वामीजी की करुणा भावना से भर गए। सभी गवाहों ने उन्हें नतमस्तक बना दिया।

यह प्रमुख स्वामी महाराज की अपरंपार करुणा थी।

दूसरों के लिए अपना जीवन व्यतीत करने वाले प्रमुखस्वामी महाराज ने कभी अपने बारे में नहीं सोचा। क्योंकि उन्होंने अपने पूरे जीवन के केंद्र में स्वयं को नहीं, बल्कि पर को एवं परमात्मा को रखा था। अपने जीवन की गंभीर परिस्थितियों में भी, उन्होंने हमेशा दूसरों के बारे में सोचा था, अपना नहीं।

आज भी जब हम प्रमुख स्वामी महाराज की करुणामयी आंखों और छवि पर विचार करते हैं, तो ऐसा लगता है कि भगवान श्री स्वामिनारायण स्वयं इस पृथ्वी पर सभी पर करुणा की वर्षा कर रहे हैं।

आज परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के दर्शनों में करुणा की वही अनुभूति हो रही है।

स्वामिनारायण प्रकाश के इस अंक में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की करुणामयी छवि की झलक दी गई है। उनकी शताब्दी के अवसर पर उनकी करुणागंगा का आचमन कर के हम भी धन्य बनें...

– साधु अक्षरवत्सलदास ◆

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज के शताब्दी पर्व पर उनकी प्रेरक अनुभूतियाँ...

शताब्दी अनुभूति

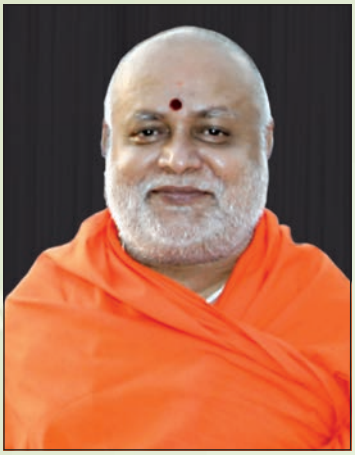

स्वामी श्री बालगंगाधरनाथजी
(अध्यक्ष, आदि चुनचुनगिरी मठ, कर्नाटक)

प्रमुखस्वामी महाराज : जिनके दर्शन से हृदय में शांति होती है...

प्रमुखस्वामी महाराज दुनिया में एकमात्र उदाहरण हैं जिन्होंने इतने सारे मंदिर बनाए और ऐसे संत बनाए। यह उनकी ओर से एक महान उपहार है। ऋषियों ने शास्त्रों के माध्यम से जो कुछ दिया है, उसे प्रमुखस्वामीजी ने साकार कर दिखाया है। ऐसा कार्य केवल भगवान का अवतार ही कर सकता है।

गीता में कहा गया है – **'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति।'** स्वामीजी गीता कथित कर्म कर रहे हैं। सभी को प्रेम देकर इतने सारे लोगों को आकर्षित करना बहुत बड़ी बात है। वे गांव-गांव जाकर आम लोगों से मिलते हैं। मैं उनके जनसंपर्क के काम से बहुत प्रभावित हूं। उन्होंने हिंदू धर्म और दुनिया के लिए शाश्वत और अद्‌भुत काम किया है। भगवान वास्तव में उनमें काम कर रहे हैं। जब मैं उनका दर्शन करता हूं, मुझे ऐसा लगता है कि मैं वास्तव में भगवान को देख रहा हूं। इतनी महानता के बावजूद उनमें सरलता और सभी गुणों को देखकर हृदय में शांति का अनुभव होता है! ऐसे सत्पुरुष के दर्शन हों वह आसान नहीं है। ◆

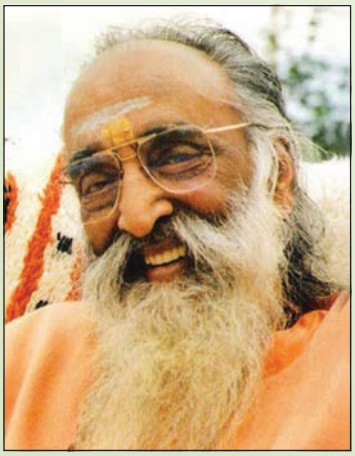

स्वामी श्री चिन्मयानंद सरस्वतीजी
(संस्थापक, चिन्मय मिशन, मुंबई)

प्रमुखस्वामीजी यानी कुशल नियोजन, प्रबंधन और भक्ति का समन्वय

आध्यात्मिक प्रगति केवल उस एक महान व्यक्ति के संबंध के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है जिसके पास ईश्वर है। प्रमुखस्वामी महाराज ऐसे महान व्यक्ति हैं। यदि उनका आध्यात्मिक प्रसंग हो जाए तो संसार की ओर जो वृत्तियां फैल गई है वह वापस मुड़ जाएं। वह ऐसे महापुरुष हैं।

उन्होंने जबरदस्त युवाशक्ति का निर्माण किया है। कुशल नियोजन, प्रबंधन और भक्ति यहाँ दिखाई देती है। प्रमुखस्वामी समाज को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करने के लिए काम कर रहे हैं। ◆

शताब्दी बोधकथा

गोविंदराम! प्रतिज्ञा ले लीजिए, हमें व्यापार नहीं करना है...

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज सहज शैली और सरल शब्दों में इस प्रकार से उपदेश गंगा प्रवाहित करते थे कि उसमें सहजता होने के कारण सभी लोग समझ जाते थे। यहाँ पर प्रस्तुत है इस प्रकार की उनकी एक प्रासादिक बोधकथा - 'गोविंदराम! प्रतिज्ञा ले लीजिए, हमें व्यापार नहीं करना है...' वे इसे इस प्रकार से प्रस्तुत करते थे कि लोग हँस-हँसकर लोटपोट हो जाते थे। इस बोधकथा का आनंद लीजिए।

भगवान स्वामिनारायण के समय में मायाराम भट्ट नाम के एक भक्त थे। उन्हें रामानंद स्वामी के समय का सत्संग था। उनके भाई गोविंदाराम थे। दोनों भाइयों ने मिलकर सोचा कि 'अब तक आटा मांग रहे हैं।' इससे कुछ धन-संचय नहीं होता है। अगर हम भिक्षा वृत्ति ही करते रहेंगे तो हमेशा के लिए जीवन नहीं चलेगा। इसलिए अगर हम कुछ व्यापार करते हैं, तो पैसा एकत्र किया जा सकता है। हम ब्राह्मण हैं, शिक्षित भी हैं। ज्योतिष विज्ञान भी जानते हैं। तो ऐसा करें..., वैसा करें...' इस प्रकार भिन्न भिन्न पेश के लिए अलग-अलग प्रकार के विचार में दोनों खो किए? मुर्गे ने सुबह बाँग दी।

मायाराम कहते हैं: 'भाई! यह क्या हुआ?'

गोविंदराम कहते हैं: 'यह तो भाई मुर्गा बोला, सुबह हो गई !!'

'ओ हो हो !' मायाराम कहते हैं: 'यह अभी तक कारोबार शुरू नहीं किया गया है और रात हो गई !! यदि हम व्यापार करेंगे तो क्या होगा? अत: गोविंदाराम! अब तो प्रतिज्ञा ले लीजिए हमें व्यापार नहीं करना है। हम जो भिक्षा वृत्ति करते हैं वह अच्छा है। बेकार का उजागरा क्यों करें? भजन करने और मेहनत करने से जो मिलता है उसे खाकर खुश रहना। जितनी आवश्यकता है इतना परिश्रम करना ज्यादा कुछ नहीं चाहिए।'

इतना कहकर उसने धंधा करने पर पूर्ण विराम लगा दिया।

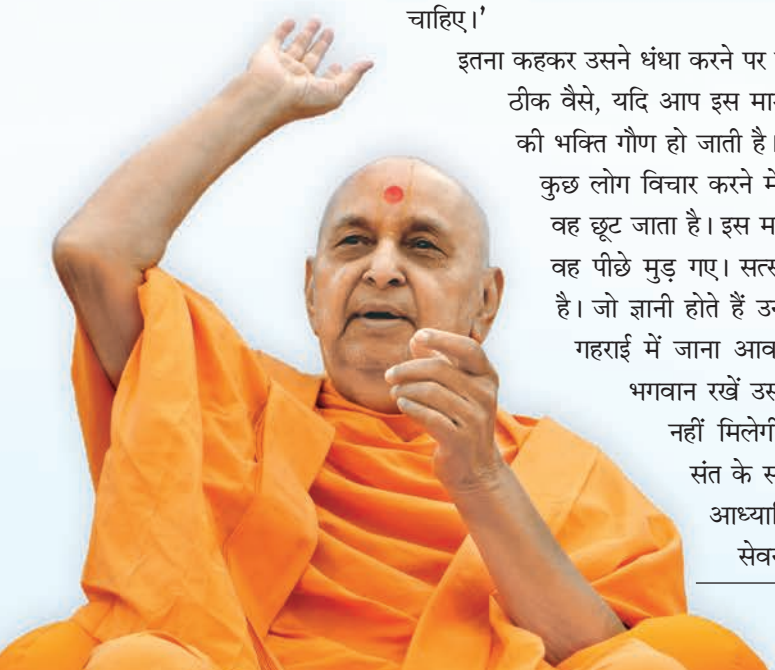

ठीक वैसे, यदि आप इस मामले में बहुत गहराई तक जाते हैं, तो आपको भगवान की भक्ति गौण हो जाती है। यदि बिस्तर लगाने में सुबह हो जाए तो सोना कब ? कुछ लोग विचार करने में ही अपना जीवन पूरा कर देते हैं और जो करना हो वह छूट जाता है। इस मायाराम को श्री रामानंद स्वामी का सत्संग था इसलिए वह पीछे मुड़ गए। सत्संग ना हो तो 'हारते जुआरी दुगुना खेले' ऐसा होता है। जो ज्ञानी होते हैं उन्हें तुरंत मालूम हो जाता है और सोचता है कि इसमें गहराई में जाना आवश्यक नहीं है। शांति से जिस समय जिस स्थिति में भगवान रखें उसमें रहना चाहिए। अन्यथा चाहे इतना करें सुख शांति नहीं मिलेगी। हम संसार के भ्रम में पड़ गए हैं, लेकिन सच्चे संत के सत्संग से ही सही रास्ता मिल जाता है। उनके द्वारा ही आध्यात्मिक मार्ग मिल जाता है। उनका हम जितना अधिक सेवन करेंगे, जीवन के कार्य उतने ही सफल होंगे। ◆

शताब्दी स्मृति

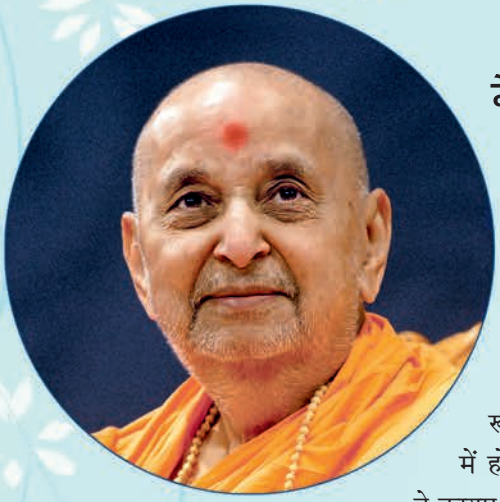

मैं हमेशा आपका स्मरण करूंगा

दि. 20 मार्च 1986 की बात है।

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री ज्ञानी जैलसिंहजी के विशेष निमंत्रण से प्रमुखस्वामी महाराज राष्ट्रपति भवन में पधारे थे।

कुछ दिन पहले 12 दिसम्बर 1985 को अहमदाबाद में स्वामीजी के निमंत्रण पर गुणातीतानंद स्वामी द्विशताब्दी महोत्सव के मुख्य अतिथि के रूप में जनता को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा था: 'हमारे देश में हो गए अवतार, ऋषि-मुनि और महात्माओं जैसा आदर्श जीवन जो किसी ने कायम रखा हो तो वे प्रमुखस्वामीजी जैसे पुरुष ही हैं। उनमें एक आकर्षण-शक्ति है, जिसकी वजह से लोग आकर उनकी बात को सुनते भी हैं और मानते भी हैं। सरकार को उनकी ज़रूरत है, इनको सरकार की ज़रूरत नहीं है। मैं देख रहा हूँ कि स्वामीजी के मन में अहंकार नहीं है। न काम, न क्रोध; न लोभ, न मोह; न भोग, न भय। इस अवस्था पर मनुष्य पहुँच जाता है तो वो जीवन्मुक्त होता है। स्वामीजी गरीबों के घर में भी जाते हैं। कुछ तो ऐसे महापुरुष होते हैं जो अमीरों के होते हैं..!'

राष्ट्रपति के मन में स्वामीजी के प्रति यही सद्भावना आज के राष्ट्रपति भवन के दौरे का कारण थी।

आज जब स्वामीजी की गाड़ी राष्ट्रपति भवन के द्वार पर पहुँची तो वे वहाँ खड़े दरबान के निर्देशानुसार आगे बढ़े। यहां एक निश्चित स्थान पर इस विशाल परिसर की सुरक्षा संबंधी गतिविधियों से गुजरना सभी के लिए अनिवार्य था, लेकिन विशेष अतिथि के रूप में स्वामीजी को सीधे प्रवेश दिया गया था। प्रमुखस्वामीजी और महंत स्वामीजी, जो इस समय ठाकोरजी के साथ थे, राष्ट्रपति की विशेष लिफ्ट द्वारा पहली मंजिल पर एक कमरे में पहुंचे और दोपहर 1:02 बजे राष्ट्रपति जी के साथ भावनात्मक मुलाकात हुई। स्वामीजी ने राष्ट्रपति जी को प्रासादिक पुष्पहार से सम्मानित किया। राष्ट्र के इस प्रथम नागरिक ने भी स्वामीजी का स्वागत किया और कहा: 'आप मानवता और विशेष रूप से भारत की इतनी सेवा कर रहे हैं कि लोगों के जीवन में अवश्य ही क्रांति आएगी। सरकार यह सब बदलाव नहीं ला सकती।'

'यह सब भगवान की प्रेरणा से हो रहा है।' स्वामीजी बोले।

लेकिन स्वामीजी को यथार्थ रूप से परखने वाले ज्ञानी राष्ट्रपति जी ने कहा, 'भगवान की प्रेरणा तो है ही, फिर भी आत्मिक शक्ति किसी के पास ही होती है। लाखों लोगों के बीच लेक्चर देने वाले तो बहुत हैं, लेकिन कोई उन पर विश्वास नहीं करता है।'

इस अहोभाव के साथ बाईस मिनट तक स्वामीजी के सत्संग का आनंद लेने के बाद, राष्ट्रपतिजी ने कीर्तन सुनने की इच्छा व्यक्त की, तब योगीचरणदास स्वामी ने 'सुमिरन कर ले...' गाया। इस कीर्तन के बाद स्वामीजी ने राष्ट्रपति जी को अपनी जपमाला प्रदान की और कहा: 'हम साधु हैं। आपको एक माला देते हैं। इससे आप भगवान का स्मरण करना।'

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, प्रमुख स्वामीजी महाराज के लिए अपार सम्मान और प्रेम से सराबोर, राष्ट्रपति भवन में स्वामीजी को सम्मानित किया और जब स्वामीजी ने उन्हें माला दी, तो उन्होंने कहाः 'मैं इस माला को घुमाते हुए भगवान के साथ आपका भी स्मरण करूंगा।'

'हम भगवान का स्मरण तो करेंगे ही, लेकिन मैं हमेशा आपका भी स्मरण करूंगा।' राष्ट्रपति जी का प्रेम उमड़ पड़ा।

इस प्रकार, राष्ट्रपति जी के साथ इस ऊष्माभरे मिलन के बाद, जब स्वामीजी ने विदाई ले कर कदम उठाया, तो राष्ट्र के यह सर्वोच्च मुखिया स्वामीजी को विदाई करने आए। किसी अतिथि को इस तरह से अलविदा कहना राष्ट्रपति जी का विशेषाधिकार नहीं है। हालाँकि, श्री जैल सिंह, जिनके मन में स्वामीजी के प्रति अपार सम्मान था, देश के सर्वोत्तम प्रोटोकॉल की अनदेखी करते हुए वे कदम उठाने लगे और स्वामीजी के साथ लिफ्ट में नीचे आ गए। नीचे उतरने के बाद राष्ट्रपति जी कार तक आए। इतना ही नहीं स्वामीजी के जाने के बाद भी वे वहीं खड़े रहे। आज वे राष्ट्रपति भवन में घूम रहे सियासी माहौल में स्वामिनारायण साधुता की महक का आनंद ले रहे थे!

इस प्रकार राष्ट्रपति जी से ऊष्माभरी विदाय लेकर स्वामीजी ने इस भव्य परिसर के मुख्य द्वार पर द्वारपाल को याद करते हुए, उसके लिए सविशेष गाड़ी रोक दी, उसका अभिवादन किया, उसको धन्यवाद दिया और उन्हें साशीर्वाद प्रसाद और मूर्तियों का उपहार दिया। स्वामीजी की इस भावना को देखकर द्वारपाल गद्‌गद हो गया। इस राष्ट्रपति भवन में जितने भी गणमान्य व्यक्ति आए हैं, उनमें से किसी ने भी अभी तक ऐसा संवाद नहीं किया है। इस 'भवन' के इतिहास में पहली बार एक ऐसी घटना दर्ज की गई जिसमें राष्ट्रपति जी से मिलने वाले मेहमान प्रमुखस्वामी महाराज अलविदा कह रहे थे और तुरंत उसी प्यार भरी हृदयोर्मि के साथ वहां के द्वारपाल को मिल रहे थे!

कई मेहमानों के लिए दरवाजा खोलने और बंद करने वाले इस दरबान के हृदय के द्वार आज खुल गए। स्वामीजी उसमें प्रवेश कर गए।

राष्ट्रपति की तरह उसका हृदय भी बोलता था : 'मैं हमेशा आपका स्मरण करूंगा...!'

स्वामीजी के स्नेह को देखने वाले हर साथी ने भी कहा: 'मैं हमेशा आपका स्मरण करूंगा।' ◆

जो पीड़ पराई जाने रे...

■ साधु ज्ञानानंददास

पांच सौ साल पहले नरसिंह मेहता ने आदर्श भक्त या संत की प्रशंसा और गुणगान करते हुए लिखा थाः 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिए जे पीड पराई जाने रे...!' पराई पीड़ा से जिसका माखन जैसा हृदय द्रवित हो जाए और उसकी पीड़ा को दूर करने के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर दे उसका नाम संत कहा जाता है। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ऐसे दयालु संत थे। उन्होंने परब्रह्म भगवान श्री स्वामिनारायण की करुणा की सच्ची विरासत को उजागर किया। भगवान श्री स्वामिनारायण के लिए लिखी गई यह पंक्ति : किसी को दुखिया रे देख सहन नहीं होता... उनके धारक प्रमुखस्वामी महाराज में भी उसी प्रकार ही प्रतिबिम्बित हुई थी। यहाँ उन करुणामूर्ति की दिव्य छवि का एक आलेखन प्रस्तुत है...

आज से दो सौ साल पहले की बात है।

सौराष्ट्र के सारंगपुर गांव में आधी रात को तेज़ बारिश हो रही थी. आंधी-तूफान के बीच बिजली गिरने से मिट्टी-ईंट के घरों की जड़ें हिल गईं। ज़ोर की चीख सुनाई दी- 'हाय भगवान्! बचाओ... भागो... भागो... मेरे सभी लड़के और मवेशी मर जाएंगे... बचाओ... भगवान बचाओ...'

रात के अँधेरे में यह चीख चारों ओर गुंजने लगी। असहनीय पीड़ा से भरी यह चीख थी, देवा पटेल की। मार्गी संप्रदाय के देवा पटेल के घर पर आपदा आई। भारी बारिश के कारण घर धराशायी हो रहा था।

देवा पटेल की यह कर्कश चीख सुनकर भगवान स्वामिनारायण जाग गए। सोये हुए सेवकों की नींद न टूटे, इस बात का ध्यान रखते हुए वे घर से बाहर निकल पड़े और अँधेरे में उसी दिशा में भागे जहाँ से आवाज आई थी। देवा

पटेल के घर में प्रवेश किया और स्थिति का पता लगाया। फिर उन्होंने बंडेर को अपने कंधों पर उठा लिया। भूशायी होने से एक विशाल घर बच गया। देवा पटेल को आश्चर्य हुआ कि इस बंड़ेर को अपने हाथों से किसने धारण किया, जिसे 10-15 आदमियों के बल प्रयोग करने पर भी नहीं उठाया जा सकता था। अंधेरे की रेखा में आकृति की पहचान नहीं की गई थी। इस बीच आवाज आई: 'भाई! अपने मवेशियों को बाहर निकालो।' भगवान स्वामिनारायण के इन शब्दों में करुणा छलकती थी। देवा पटेल ने श्रीहरि को पहचान लिया। श्रीहरि ने बंडेर को अपने कंधे पर उठा लिया था। देवा को लगा कि भगवान की करुणा, बारिश जितनी है। उसने अपने सभी पुरुषों और महिलाओं और मवेशियों को बाहर निकाला।

ऐसे थे करुणामूर्ति - भगवान श्री स्वामिनारायण।

इस घटना में श्रीहरि का संपूर्ण व्यक्तित्व झलकता है। जब भी पीड़ित लोग या कोई भी चिल्लाया, दयालु भगवान स्वामिनारायण बिना एक पल की देरी के वहां पहुंचे और अनजाने में दया कर दी।

हाँ, इस धरती पर भगवान का प्रकट होना एक बड़ी दया है। भगवान स्वामिनारायण की यह करुणा उनके बाद भी गुणातीत गुरुपरंपरा के माध्यम से प्रकट रही है। आधुनिक युग में, पृथ्वी के नौ महाद्वीपों पर, भगवान का यह करुणामय गुण महान संत - ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन का पर्याय और परिचय बन गया!

एक ऐसे युग में जब स्वार्थ पनप गया है, ऐसे समय में जब रिश्तेदार भी अजनबियों की आड़ में घूम रहे हैं, जब निजी लाभ और महत्वाकांक्षा के कारण पहरेदार भी भक्षक बन रहे हैं, स्वामीजी की करुणागंगा का प्रवाह इस युग की एक दुर्लभ घटना है।

जीवों के प्रति स्नेह की भावना रखने वाला ही दूसरों का दर्द समझ सकता है। संत में यह अनुभूति होना उनका संतत्व है। जैसे फूलों में सुगंध और चीनी में मिठास जन्मजात होती है, वैसे ही संत में दूसरों के दर्द को जानने, समझने और मिटाने की जन्मजात क्षमता होती है।

भक्त कवि नरसिंह मेहता ऐसे संत के लिए कहते हैं, वैष्णव जन तो तेने रे कहिए, जे पीड पराई जाने रे!

भागवत महापुराण संत की इस भावना को 'दया' के रूप में संबोधित करता है और इसे संत के कल्याणकारी गुणों में एक स्थायी स्थान देता है। इसके अलावा, महाभारत इस संतत्व को पूर्णता का अवसर देने के लिए लिखता है:

'दयावन्तः सन्तः करुणवेदिनः' संत दया और करुणा से पूर्ण होते हैं।

परपीड़न को जानने और मिटानेवाले प्रमुखस्वामी महाराज को यथार्थ रूप से विज्ञाता पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब लिखते हैं: 'प्रमुखस्वामीजी वास्तव में लोगों से पूरे दिल से प्यार करते हैं। इसलिए लोगों के दुख उनके अपने बने रहते हैं। मैं इसे उनमें देख सकता हूं।'

स्वामीजी का ध्येय दूसरों के दुख में दुखी रहना और दूसरों के सुख में सुखी रहना था। इसलिए जब भी समाज पर विपदा आती थी, प्रमुखस्वामी महाराज की करुणा अवश्य खिल उठती थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी कहते हैं:

'प्रमुखस्वामी समाज के एक ऐसे व्यक्ति हैं जो जहाँ भी आपदा होती, वहां सेवा के लिए वे पहुंच ही जाते। गुजरात में कोई प्राकृतिक आपदा आई नहीं कि प्रमुखस्वामी महाराज वहां मदद के लिए खड़े हुए नहीं !!!'

1986-87-88 में, 1990 में बड़े पैमाने पर सूखा राहत अभियान पर स्वामीजी लंदन पहुंचे। संयोग से, सौराष्ट्र में बिना बारिश का मानसून फिर से समाप्त हो रहा था। स्वामीजी को यह समाचार मिला। उनकी आंखों के सामने पूरा सौराष्ट्र क्षेत्र आकार ले रहा था। अंगारों की तरह चिलचिलाती सूखी धरती को उम्मीद से निहार रहे गरीब और दुखी किसानों को भूख-प्यास से मरने वाले जानवरों के दृश्य दिखाई देने लगे। स्वामीजी बहुत द्रवित हो गए। उस दिन वह आधी रात को उठे, बिस्तर में बैठ कर सौराष्ट्र के पीड़ितों के लिए प्रार्थना करने लगे। इस एकांत और नीरवता में स्वामीजी के कंठ से केवल एक मधुर स्वर निकल रहा था। उनके विशाल हृदय में बहने वाली करुणा की नदी हजारों मील पिघलकर सौराष्ट्र के गरीब लोगों तक पहुंचती प्रतीत होती थी। सौराष्ट्र के लोग, जो हजारों मील दूर रहते हैं, कैसे जान सकते हैं कि एक दयालु संत अपनी नींद, आराम और सुविधा को भूलकर हमारी चिंता करते हैं! लेकिन एक दिन जब सेवक को रात के दो बजे उठना पड़ा तो पता चला कि स्वामीजी पिछले कई दिनों से दूसरों के दर्द को शांत करने के लिए इस तरह से प्रार्थना कर रहे हैं!!

प्रमुखस्वामी महाराज की करुणा यहीं तक सीमित नहीं थी। उनकी करुणा ने व्यक्ति को सक्षम कर दिया। स्वामीजी के पास एक मजबूत हृदय और एक मजबूत फोलादी हाथ था जो पीड़ित के ढहे हुए घर, टूटे हुए परिवार और निराश हृदय का सहारा हो सकता था। भगवान स्वामिनारायण की तरह उन्होंने भी अपने कंधे पर पूरे समाज की बंडेर को ऊपर उठाया था।

रामानुज संप्रदाय के प्रमुख धर्मगुरु श्री यतिराज जियर स्वामी ने आध्यात्मिकता और लोकसेवा का दुर्लभ संयोजन

रखने वाले प्रमुखस्वामी महाराज की इस अजीबोगरीब शैली का वर्णन करते हुए कहा:

'आध्यात्मिक जीवन आमतौर पर अंतर्मुखी होता है, ईश्वर के साक्षात्कार से जुड़ा होता है, लेकिन फिर भी सार्वजनिक सेवा में बाधा नहीं होती है। प्रमुखस्वामी महाराज इसका सटीक उदाहरण हैं।'

इस प्रकार, प्रमुखस्वामी महाराज ने न केवल परहित के बारे में सोचा, बल्कि समाज के दर्द को दूर करने में उनकी मदद की।

26 जनवरी 2001 की सुबह गुजरातियों के लिए एक भयानक सदमा थी। उस सुबह एक विनाशकारी भूकंप ने गुजरात की भूमि को तबाह कर दिया। कुछ ही पलों में दुखद रोना, दर्द, हताशा, अनिश्चितता आदि गुजरात लौट आया। हजारों लोग बेघर और बेसहारा हो गए। प्रमुखस्वामी महाराज का हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने पीड़ितों की पीड़ा को कम करने के लिए तुरंत हजारों बी.ए.पी.एस. स्वयंसेवकों और संतों को भूकंप प्रभावित कच्छ क्षेत्र में भेजा। जब भूकंप पीड़ित समाज अभी तक स्थिति को समझने के लिए तैयार नहीं था, तब स्वामीजी ने उसी दोपहर भुज में भूकंप पीड़ितों को भोजन का पहला निवाला दिया। बी.ए.पी.एस. संस्था भूकंप पीड़ितों के लिए एक दिन में 40,000 लोगों को गर्म और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए रसोईघर पूरजोश में कार्यरत हो गया था। लेकिन स्वामीजी की संवेदनशीलता यहीं तक सीमित नहीं थी।

स्वामीजी अजनबियों की दुर्दशा को समझने के लिए कितने संवेदनशील हैं, यह तब सामने आया जब स्वामीजी पीड़ितों की चिंता कर रहे थे और बोचासन में वेदज्ञ स्वामी से पूछ रहे थे: 'इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कोई कूड़ा-करकट न छूटे।' अटलादरा में भूकंप पीड़ितों के लिए भोजन के पैकेट तैयार किए जा रहे थे, वहां खड़े होकर उन्होंने कहा: 'प्रत्येक भोजन के पैकेट में बूंदी और गांठिया के साथ दो अचारी मिर्च डालें। कच्छ में लोग गांठिया (चने का नमकीन) पर मिर्च खाना पसंद करते हैं।'

भूख से पीड़ित भूकंपग्रस्तों को शायद एहसास भी नहीं होगा कि एक महापुरुष उनके लिए कितना सूक्ष्म सोच रहे हैं! लगभग 500 भूकंप प्रभावित गांवों में अस्पतालों और स्कूलों से लेकर गोद लिए गए पंद्रह गांवों-बस्तियों के निर्माण तक के राहत कार्यों के अलावा स्वामीजी ने सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी। स्वामीजी ने स्वयं भूकंप प्रभावित गांवों का दौरा कर हजारों पीड़ितों का गर्मजोशी से स्वागत किया। उनके प्रेम, सेवा और परहित के प्रयासों ने भूकंप से त्रस्त गांवों में फिर से चेतना लौटी। इतना ही नहीं, बी.ए.पी.एस. संस्थान द्वारा गोद लिए गए गांव गुजरात के आदर्श गांवों में से हैं।

स्वामीजी और संगठन की सेवा से प्रभावित होकर गुजरात राज्य के पूर्व मुख्य सचिव श्री पी.के. लहेरी लिखते हैं:

'प्रमुखस्वामी महाराज की प्रेरणा से, गुजरात में राहत रसोई, स्कूल, नर्सरी, अस्पताल जैसी सामुदायिक सेवा सुविधाओं का पुनर्निर्माण BAPS द्वारा शुरू किया गया है। संगठन ने इतनी चतुराई और तेज़ी से किया है, जो बेमिसाल है। इस नि:स्वार्थ, समर्पित और प्रबुद्ध संत ने लाखों परिवारों के जीवन में एक नई रोशनी दी है। उन्होंने मानव सेवा और प्रभुसेवा के आदर्श को वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया है।'

स्वामीजी की नि:स्वार्थ भावना, परोपकारी सेवा गतिविधि ने सभी को छुआ है। हाँ, क्या सूर्य को सारी दुनिया को जागरूक और ऊर्जा से भरपूर रखने में कोई दिलचस्पी है? क्या चन्द्रमा को शीतल प्रकाश प्रदान करके अंतहीन पौधों को पोषित करने की व्यक्तिगत लालसा है? क्या आपने कभी राहगीरों के लिए छाया और फलों का प्रदान करने वाले पेड़ों में उनकी अपनी लालसा देखी है? नहीं, सूर्य, चन्द्र या वृक्ष का यह गुण सदैव दूसरों के लिए होता है। इतना ही नहीं, यह परोपकार और पराई सेवा की वृत्ति उनकी मुख्य विशेषता बन गई है। उसी प्रकार संत में भी ये गुण केवल दान के लिए होते हैं। ऐसी सेवा तब होती है जब स्वार्थ की घंटियाँ बंद हो जाती हैं और परोपकार की मधुर शहनाई बजने लगती है।

जी हाँ, इस जनसेवा के पीछे स्वामीजी का दृष्टिकोण एकदम स्पष्ट है! सेवा का अर्थ है परोपकार। इसमें न तो कोई स्वार्थ होना चाहिए या नहीं या प्रसिद्धि का कोई इरादा। केवल भगवान को प्रसन्न करने का इरादा हो। जहां महानता प्राप्त करने की वृत्ति नहीं है, जहां भेदभाव नहीं है, केवल मानवता के दर्द को दूर करने का इरादा है, वहां इतनी उच्च संवेदनशीलता होगी!

18-8-2006 को स्वामीजी ने बैंगलोर से सूरत फोन जोड़ा। वहां बाढ़ पीड़ितों की सेवा में लगे BAPS संगठन के कार्यकर्ताओं को संबोधित किया: 'यदि आप कड़ी मेहनत करते हैं तो भगवान प्रसन्न होंगे। आप अपनी महानता के लिए यह सेवा नहीं करते हैं। यही मानव सेवा है। यह भगवान को प्रसन्न करने के लिए सेवा है। श्रीजी महाराज ने कहा है कि दुखी लोगों की सेवा करना। इसलिए आप सभी को सावधान रहना होगा और देखना होगा कि राहत सामग्री का वितरण अच्छी तरह से हो। खाद्य किट के वितरण में भेदभाव न हो।

इस अनाज किट सभी को बांटें। सबको खुश करो।'

संत की यह करुणा अपनी सीमाओं को छोड़कर जनहित के लिए निरंतर प्रवाहित हो रही है। इस धाराप्रवाह में जीव-प्राणीमात्र ही अपनी प्यास बुझाते हैं।

स्वामीजी की करुणा के प्रवाह की कोई सीमा नहीं है।

1993 में महाराष्ट्र का भूकंप स्वामीजी की कई दयासिक्त परसेवाओं की याद दिलाता है, जिसमें दो गोद लिए गए गाँवों का निर्माण भी शामिल था। स्वामीजी द्वारा गोद लिए गए भूकम्प पीड़ित समुद्राल और कोंडजीगढ़ गांवों में आज लोग स्वामीजी की सेवा के गुण गाते नहीं थकते। इसलिए, 1999 में उड़ीसा में आए तूफान की आपदा में भी, स्वामीजी ने गोद लिए गए दो गांवों के निर्माण और कई अन्य राहत कार्यों का हाथ बढ़ाया। उड़ीसा के लोगों ने स्वामीजी द्वारा दी गई सहायता में जगन्नाथ का हाथ महसूस किया। भारत के सुदूर दक्षिण में चेन्नई से लेकर कन्याकुमारी के दक्षिण-पूर्वी तट और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के द्वीपों और श्रीलंका के सूनामी पीड़ितों तक स्वामीजी की करुणागंगा बहती है। स्वामीजी ने अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के बावजूद, तमिलनाडु, उड़ीसा और महाराष्ट्र के दूरदराज के गांवों तक जाकर सूनामी प्रभावित गांवों को अपनाकर और उनका पुनर्निर्माण करके स्वयं वहां जाकर सभी को हृदय की ऊष्मा दी है।

2006 में सूरत में आई बाढ़ से प्रभावित लोगों से लेकर नैरोबी तक दार-एस-सलाम के पीड़ितों के लिए स्वामीजी की करुणा बह गई है। अमेरिका जैसे विकसित देशों में भी स्वामीजी ने संगठन के माध्यम से सेवा की है, चाहे वह कैलिफोर्निया के भूकंप पीड़ित हों या कैटरीना और इरमा जैसे भयानक चक्रवाती तूफान में फंसे शहरवासी, दुनिया ने स्वामीजी की करुणा का अनुभव किया है।

भारतीय दलित समुदाय के नेता श्री शंभू महाराज के शब्दों में, प्रमुखस्वामी महाराज की करुणागंगा समुदाय के अंतिम व्यक्ति तक पहुँची है। चाहे वनवासी हों या पिछड़ी जिंदगी जीने वाली अनेक जातियां, पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति मांगने वाले छात्र हों या नौकरी-व्यवसाय की तलाश में भटक रहे युवा, आत्मनिर्भर बनने की कोशिश कर रही बहनें हों या अपने लिए रोजगार की तलाश में दुखी विधवाएं... प्रमुख स्वामी महाराज ने संस्था की सैकड़ों प्रवृत्तियों के द्वारा सभी का हित किया है और आजीविका देकर सबका कल्याण किया है, नि:स्वार्थ भाव से सेवा की है।

स्वामीजी द्वारा किए गए परोपकार केवल मानव सेवा तक ही सीमित नहीं थे। स्वामीजी सर्वजीवहितावह थे। जो सर्वजीवहितैषी हो, वह किसी भी प्राणी का दुख कैसे देख सकते हैं? प्रमुखस्वामी महाराज के करुणामय हृदय में उतनी ही जगह अबोल पशु-पक्षियों के लिए भी थी।

1986-87 में गुजरात की धरती निर्जल हो गई और बादल गुजरात का पता भूल गए। गुजरात के सभी जानवर अकाल की कड़ी सजा भुगत रहे थे। अबोल मवेशियों के लिए यह बहुत कठिन समय था। यहाँ तक कि मनुष्यों के पास भी अपना भरण-पोषण करने के लिए बमुश्किल पर्याप्त भोजन और पानी था, ऐसी भयानक स्थिति निर्मित हो गई थी कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी! किसान भी बेबस हो गए और अपने पशुओं को इधर-उधर भटकने छोड़ देने लगे। कुछ लोगों ने जानवरों को मवेशीखानों में बंद करना शुरू कर दिया। लेकिन मवेशीखानों की स्थिति भी दयनीय हो गई। पर्याप्त घास और पानी की कमी के कारण गाय, भैंस और बैल जैसे कृषि में उपयोगी जानवर कुपोषण के शिकार हो गए। यह देख कर विरक्त और नि:स्पृह संत प्रमुख स्वामी महाराज को कंपकंपी महसूस हुई।

उस समय राजकोट के पास रतनपुर में एक सरकारी पशुशाला में पांच हजार बछड़ों को रखा गया था। जब स्वामीजी उन्हें देखने आए, तो हजारों बछड़े भूख से मर रहे थे, कुछ खाने की उम्मीद में उनकी ओर दौड़े। स्वामीजी का हृदय द्रवित हो उठा। स्थानीय कार्यकर्ता ने बताया कि उन सभी ने दो-तीन दिन से कुछ नहीं खाया था। सो ये भूखे बछड़े जो कोई इस रीति से यहां आते हैं उनके पीछे हो लेते हैं, मानो वे उन्हें कुछ देने ही न आए हों! यह दृश्य देखकर स्वामीजी सन्न रह गए, उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े। तुरंत गोंडल पहुंचकर उन्होंने ज्ञानप्रसाद स्वामी को बुलाया और कहा, 'मैं देख नहीं पा रहा था कि रतनपुर में बछड़े कैसे दौड़ रहे थे! चलो घास की ट्रक अभी वहीं भेजते हैं।'

और तुरंत ट्रक भर कर चारा अबोल जानवरों के लिए भेजा गया।

शायद भक्त के हृदय में तुलसीदासजी ने प्रमुख स्वामी महाराज की करुणामय हृदय के लिए लिखा-

संत हृदय नवनीत समाना...
परदुख द्रवहि सो संत पुनीता...

कहने का तात्पर्य यह है कि सही अर्थ में वही संत है जिनका हृदय दूसरों के दुख को देख कर दया से पिघलता है।

अकाल के उन दिनों में, जानवरों और लोगों की पीड़ा को देखकर, स्वामीजी अक्सर गहरे मंथन में डूब जाते थे। एक बार बातचीत में स्वामीजी कहते हैं: 'अभी मेरी कोई इच्छा नहीं है।

अभी तो बारिश की कामना है। खाते-पीते, उठते-बैठते वही इच्छा बनी रहती है। सारा दिवस जलती हुई आग की तरह गुजरता है।' एक अबोल जानवर के दर्द के साथ एकजुट हुए बिना ऐसे शब्दों का उच्चारण करना असंभव है।

स्वामीजी ने तुरन्त निर्णय लिया। सैकड़ों संतों और हजारों स्वयंसेवकों को रोजगार दिया। मवेशियों के लिए उच्च सुविधाओं से लैस छह केटल शिविर खोले, 21000 मवेशियों को संवारने की जिम्मेदारी ली। हजारों टन चारे की व्यवस्था कर अन्य पशुशालाओं में भी लाखों की मदद पहुंचाई। गरीब किसानों को 35 टन कपड़े बांटे। समाज की भूख मिटाने के लिए रोजाना 1 लाख लीटर छास और 100 टन सुखड़ी बांटी।

केवल एक दो बार नहीं, अनेकबार प्रमुखस्वामी महाराज ने जीव प्राणी मात्र की देखभाल के लिए पसीना बहाया है। उनके पाल-पोस की आजीवन गतिविधि की है! 17,000 से अधिक गांवों में घूमना, 7.5 लाख पत्राचार और कई व्यक्तिगत मुलाकात यात्राएं, 1200 से अधिक मंदिरों का निर्माण, 45 प्राकृतिक आपदाओं में राहत कार्य, 2 लाख पीड़ितों को सहायता, 25 गोद लिए गए गांवों का निर्माण, 21,000 जानवरों को तैयार करना, 7 अच्छी तरह से सुसज्जित अस्पताल और पिछड़े हुए सैकड़ों गांवों में 11 चल चिकित्सालयों के द्वारा आरोग्य सुविधा, 50 लाख सीसी रक्तदान, टीकाकरण केंद्र, 40 लाख लोगों की नशामुक्ति, 23 छात्रावासों का निर्माण-14 स्कूल-75 गोद लेने वाले स्कूल, पिछड़े क्षेत्रों के 29 लाख मरीजों का मुफ्त इलाज, 800 से अधिक प्रकाशन और 18 पत्रिकाएं... संगठन के मुखिया प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा स्वयं उनकी करुणा का एक शिलालेख है।

स्वामीजी ने लाखों परिवारों की ज्वलंत समस्याएं सुलझाई हैं। परिवारों को संबोधित किया है। चाहे बिस्तर पर बीमार हों, जीवन के अंतिम घंटों में बुजुर्ग हों, उदास और टूटे-फूटे युवा हों, या वे किशोर जो पल भर के गुस्से में पछता रहे हों, स्वामीजी ने वात्सल्य ऊर्जा से सीधे उनके आंसू पोंछे हैं। इतना ही नहीं, स्वामीजी ने सालाना 20 लाख से अधिक सत्संग सभाओं के माध्यम से एक ऐसे समाज का निर्माण किया है जो आत्म-विश्वास, करुणा, सेवा, प्रेम के मूल्यों से जीता है और उसी के अनुसार एक मजबूत समाज और शांतिपूर्ण दुनिया के निर्माण के लिए काम करता है।

स्वामीजी के ये महान कार्य जो उनकी करुणा और दया से उत्पन्न हुए हैं, मानवता का एक अनूठा इतिहास है। ऐसा सौम्य कार्य तभी संभव होता है जब व्यक्ति वासना और स्वार्थ से ऊपर उठे। सहनशीलता और आत्म-समर्पण की भावना ऐसे काम को लंबे समय तक बनाए रखती है। और जब सभी कार्यों को ईश्वर को समर्पित करने की भावना हो तभी वह कार्य पूर्ण संतुष्टि और संतोष लाता है। यह स्वामीजी की कार्यशैली या जीवन शैली थी। कवि कालिदास ऐसे संत के लिए कहते हैं जो दूसरों की भलाई के लिए अपना जीवन दे देता है:

स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः
प्रतिदिनमथवा ते वृत्तिरेवंविधैव ।
अनुभवति हि मुर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं,
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् ॥

जिस प्रकार वृक्ष सूर्य को सहन कर सभी को छाया देते हैं, उसी प्रकार संत स्वयं कष्ट सहकर दूसरों का भला करते हैं।

केवल परोपकार, परहित और पर-सुख के लिए जीने वाले प्रमुखस्वामी महाराज ने उनके सेवा कार्य में बाधा डालने या बुराई करने वालों पर भी दया की है। उनके शरीर की पीड़ा, बीमारी, विघ्नों के बीच भी उनकी यह करुणा बिना किसी रुकावट के प्रवाहित होती रही है। संतों ने जब सूखा राहत के दौरान इनमें से कुछ विघ्नहर्ताओं की उल्टी-सीधी बातों के बारे में स्वामीजी से बात की, तो उनका उत्तर था - 'हम यह सब काम भगवान को प्रसन्न करने के लिए करते हैं। हमें निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी है। किसी के सामने मत देखो।'

हितोपदेश कहते हैं: **छेत्तुः पार्श्वगतां छायां नोपसंहरते द्रुमः ॥**

(शेषांश पृष्ठ 31 पर)

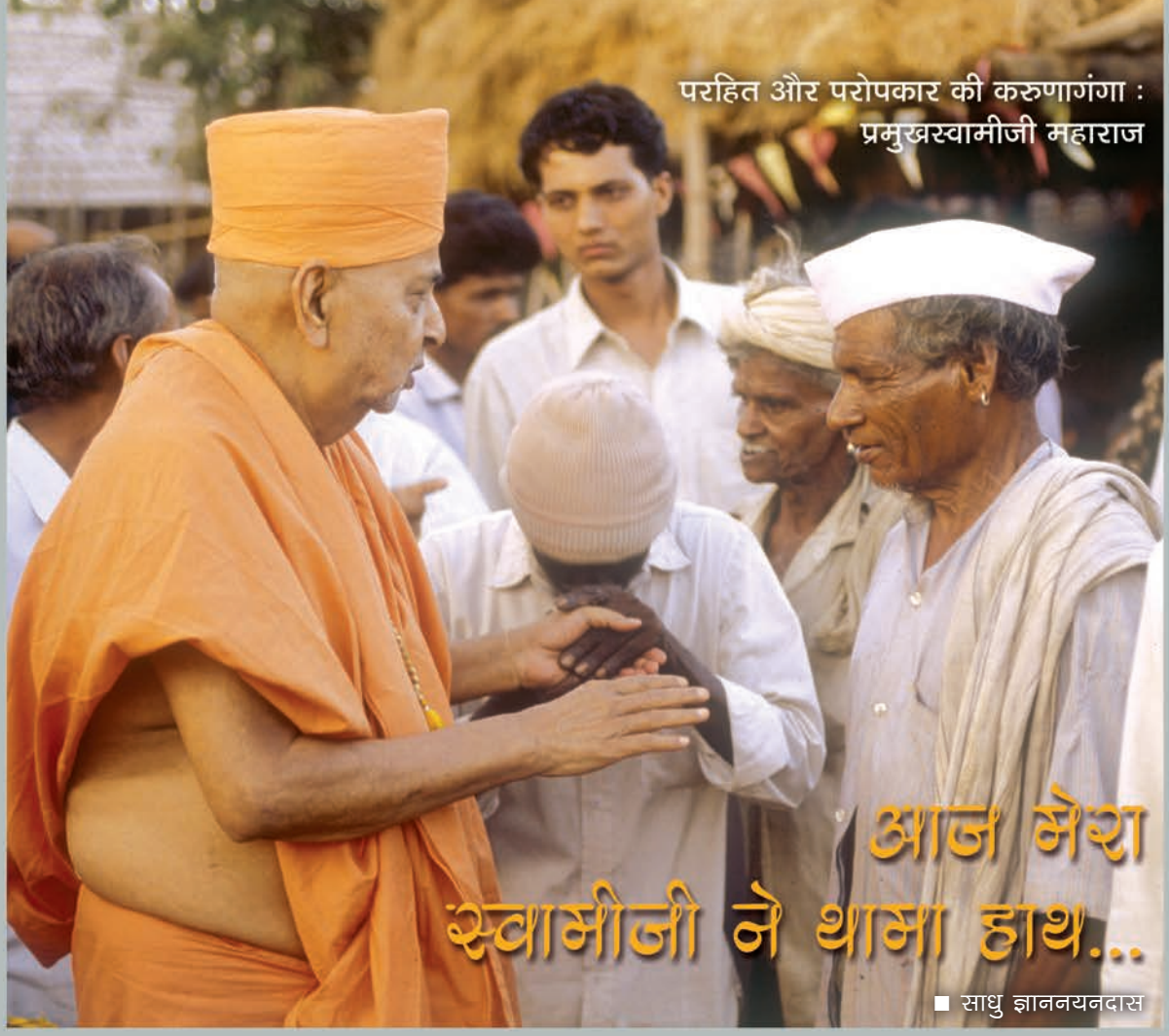

परहित और परोपकार की करुणागंगा :
प्रमुखस्वामीजी महाराज

आज मेरा स्वामीजी ने थामा हाथ...

■ साधु ज्ञाननयनदास

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का अर्थ है परोपकार और करुणा की अविरल बहती धारा। स्वामीजी ने अनेक अजनबियों, गरीब और दयनीय लोगों के हाथ थामे हैं। उन्हें सुख, शांति और आनंद की अनुभूति कराई है। स्वामीजी ने अनाथ पुत्र को वात्सल्य की शीतल छाया दी, किसी शरीर रोगी या मानसिक रोगी को स्वस्थ जीवन दिया, व्यसन और अंधविश्वास के रसातल में खोए किसी को बचाकर नया जीवन दिया, परिवार के दव में जलते हुए कितनों के हृदय में शांति बिछा दी। स्वामीजी की करुणा निःस्वार्थ भाव से, व्यक्ति से समुदाय तक प्रवाहित हो रही थी।

सरवर तरवर संतजन, चौथा बरसे मेह;
परमारथ के हेतु ही, चारों धरी है देह।

कबीरजी की यह पंक्ति ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन का सार है। सरोवर का कोई स्वार्थ नहीं है, दूसरों की प्यास बुझाने के लिए ही उसका जीवन है। पेड़ कभी भी अपने लिए अपने फूल, फल या छाया का उपयोग नहीं करता है। उसके पास सब कुछ दान के लिए है। जमीन की गर्मी और किसानों के संताप को हरने वाली बारिश भी केवल दूसरों के लिए ही बरसती है। उसी तरह सच्चे संत का जीवन केवल परहित को समर्पित होता है। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने भी केवल परमार्थ के लिए, परहित के लिए, दूसरों की सेवा के लिए अपना जीवन बिताया। अनजान में भी उनके संपर्क में आने वाले कोई भी व्यक्ति स्वामीजी की इस दुर्लभ छवि को जीवन भर नहीं भूल सके। अगर हम लोगों के लाभ के लिए उनके द्वारा किए गए अंतहीन उपकार के बारे में लिखने के लिए बैठ जाएं, तो शायद दशकों भी कम होंगे।

आइए, इस लेख में ऐसे अवसरों के सागर से कुछ अवसरों पर एक संक्षिप्त नज़र डालें।

बात 1928 के आसपास की है। अमरेली जिले के खांभडा गीर नामक गांव में एक किसान की कम उम्र में मौत

हो गई। अचानक हुई इस घटना से किसान के पंद्रह वर्षीय पुत्र भूरा पर शोक का पहाड़ टूट पड़ा। इस पंद्रह वर्षीय किशोर को देखकर रिश्तेदारों को भी दया आती थी कि उसके पिता की छत्रछाया के बिना भूरा का क्या होगा? हालांकि, परिवार की आजीविका ज्यादा चिंता का विषय नहीं थी, क्योंकि दिवंगत पिता ने भूरा के लिए 700 एकड़ जमीन और अच्छी संपत्ति छोड़ दी थी। लेकिन अपने पिता की छत्रछाया को एक किशोर के रूप में खो देने वाला पंद्रह वर्षीय भूरा, अपनी कच्ची उम्र, अकूत संपत्ति का मद और अफीम के व्यसनी दोस्तों के साथ वास्तव में 'भुरायो' बन गया था।

भूरा अफीम का एक अथक व्यसनी बन गया। समय बीतता चला। अब वह भूरा भाई प्रजापति के नाम से जाना जाता था, लेकिन अफीम की महफ़िल और उसके पीछे धन का धुआं वही रहा। दो-पांच साल के लिए नहीं, बल्कि छाठ-छाठ साल तक भूरा अफ़ीम में डूबा रहा। व्यसन करने से 700 एकड़ जमीन तबाह... परिवार की खुशियां और बच्चों का भविष्य भी तबाह हो गया। पत्नी और बच्चों से हरीभरी दुनिया थी, लेकिन भूरा के लिए एक ही सच्चा साथी था - अफीम।

भूरा अपने बेटों के कोमल बच्चों को चाय के साथ अफीम पिलाकर उन्हें अफीम का आदी बना दिया था। परिणामस्वरूप अफीम ने भूरा के परिवार को इस तरह अपने कब्जे में ले लिया कि 700 एकड़ जमीन बेचकर बमुश्किल पंद्रह एकड़ जमीन बची और वह उसे गिरवी रखने को मजबूर हो गया!

वहीं, गुजरात में भीषण सूखा पड़ा था। 1985, 1986, 1987 जैसे तीन साल तक रसातल से पानी की एक भी बूंद नहीं बरसी। अकाल के कंपानेवाले थपेड़ों ने भी भूरा को तहस-नहस कर दिया। परिवार को खिलाने में ज्योंत्यों कर के कामयाब रहा, लेकिन गूंगे जानवरों का क्या? जानवर भूखे मर रहे थे। एक मुश्किल स्थिति पैदा हो गई जहां पैसे का भुगतान से भी घास नहीं मिल रही थी। इसमें भूरा को खबर मिली कि प्रमुखस्वामी महाराज ने सूखे के दौरान जानवरों को बचाने के लिए एक मवेशी शिविर शुरू किया है, जिसमें सभी प्रकार के जानवरों को वैज्ञानिक तरीके से मुफ्त में तैयार किया जाता है। यह सुनकर 75 वर्षीय भूरा भी अपने मवेशियों के साथ वह मवेशी शिविर की ओर प्रस्थान किया। जब केटल शिविर में भूराभाई आया तो उसकी जेब में अफीम थी। जब संतों को इस बात का पता चला तो उन्होंने भूराभाई पर दया की और उन्हें बहुत समझाया, लेकिन भूराभाई के लिए अफीम की जंजीरें हीरे जैसी थीं, वे किसी भी तरह से नहीं टूटीं।

उसी समय, प्रमुखस्वामी महाराज ने मवेशी शिविर का दौरा किया। भूराभाई के जीवन में आज का दिन अविश्वसनीय होने वाला था। स्वामीजी की उपस्थिति में एक शिविर सभा का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त पशुपालक उपस्थित थे। लगातार दूसरों का हित साधते हुए स्वामीजी ने बैठक में सभी से नशामुक्ति के बारे में जबरदस्त बात की। उनकी कोमल, परोपकारी और निर्भीक आवाज ने बहुतों की आत्मा को जगा दिया। सभा में उपस्थित कई लोगों ने नशा छोड़ने का संकल्प लिया। स्वामीजी की वाणी ने भूरा के हृदय को प्रभावित करना शुरू कर दिया। तमाम 'आह' के बीच भूराभाई खुद उठ खड़े हुए। धीरे-धीरे स्वामीजी के पास गए। स्वामीजी की गोद में सिर रखकर वह रोने लगे। उन्होंने स्वामीजी के समक्ष अपना जीवन खोल दिया। स्वामीजी की गोद भूराभाई के पश्चाताप के आंसुओं से भीग गई। करुणामूर्ति स्वामीजी ने उनके सिर पर वात्सल्य से हाथ रखा, उन्हें प्रशंसा का आशीर्वाद दिया, उन्हें शक्ति प्रदान की। इससे भूराभाई में एक नई चेतना का संचार हुआ।

सभा समाप्त होते ही उन्होंने अफीम को जमीन में गाड़ दिया और अपने शेष जीवन में कभी भी अफीम नहीं खाने की कसम खाई। 75 साल की उम्र में स्वामीजी के पास एक नए जीवन की शुरुआत होने लगी...

लेकिन 60-60 साल से जम गए अफीम के फंदे से कैसे छूटा जा सकता है? नशे के आदी भूराभाई के शरीर में बगावत होने लगी। भूराभाई लगातार तीन दिनों तक गंभीर रूप से बीमार रहे। हाथ-पैर टूटने लगे। शरीर उछलने लगा। डॉक्टरों ने भूराभाई को अफीम की लत नहीं छोड़ने के लिए कहा। लेकिन भूराभाई के हृदय में स्वामीजी ने ताकत दी थी, उन्होंने कहा: 'जिस मुंह से प्रमुखस्वामी बापा का नाम लिया, अब उस मुंह में अफीम नहीं डालूंगा, अगर शरीर गिर गया, तो स्वामीजी मुझे अक्षरधाम ले जाएंगे, लेकिन मैं अफीम नहीं लूंगा...!'

और स्वामीजी के आशीर्वाद से भूरा भाई सप्ताह भर में तो स्वस्थ हो गए और बिल्कुल नशा मुक्त हो गए। उन्होंने कहा, 'मेरा जीवन तो सुधर गया, अब स्वामीजी के प्रताप से मेरी तो उन्नति तरक्की होगी ही इसमें कोई संशय नहीं, लेकिन मैंने मेरे छोटे-छोटे बच्चों को अफीम वाली चाय पिलाई है। अब मैं घर वापस जाऊंगा, बच्चे मेरे पास अफीम मांगेंगे तब मैं क्या कहूंगा? मैं कहूंगा कि अब अफीम त्याग दो। चूंकि मैं अफीम का स्रोत हूं, मैंने एक बड़ी गलती की है' आखिरकार, स्वामीजी से प्रेरित होकर, 75 वर्ष की आयु में, उन्होंने अपनी गलती को सुधारने के लिए दृढ़ संकल्प किया। प्रमुखस्वामी

महाराज की करुणा ने एक ऐसा दृश्य निर्मित किया जहाँ बुझे हुए दीपक की ज्योति फिर से प्रज्ज्वलित हुई। घर में सब नशामुक्त हो गए।

यह प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा किए गए विशाल नशामुक्ति कार्य का सिर्फ एक प्रसंग हमने देखा। आज भी स्वामीजी की प्रेरणा से नशामुक्ति का व्रत लेने वाले 40 लाख से अधिक लोग अपने इस परम हित के स्मरण से अभिभूत हैं।

देदावासन के दलूभाई, जो कच्चा मांस खाते थे और भारी मात्रा में शराब पीते थे, सब छोड दिए। उनका शेष जीवन पवित्र, भक्तिमय बीता। उनकी मृत्यु से एक दिन पहले के उनके अंतिम शब्द कुछ इस तरह थे, 'यदि प्रमुखस्वामी बापा मुझसे नहीं मिले होते, तो मैं कभी का मर गया होता। स्वामीजी ने मेरे जीवन को निर्मल बनाया। उन्होंने मेरे शराब और मांस छुड़वा दिये... तबसे हम लोग सुखी हुए, नहीं तो हमारी किस्मत में झोपड़ी नहीं थी। लेकिन स्वामीजी के आशीर्वाद से आज हमारे घर महल जैसे बन गए हैं।'

परहितकारी स्वामीजी की इस करुणागंगा का सहज संबंध दुखियों के दु:ख संताप को भी दूर कर देता था। अक्सर जिनका हित स्वामीजी ने किया है उन्हें यह भी नहीं पता होता था कि एक वीतरागी संत उनके हित की देखभाल कर रहे हैं।

2010 में, एलिकॉन कंपनी के मालिक प्रयासविनभाई के अनुरोध पर, स्वामीजी अपने आणंद स्थित मधुभान रिसॉर्ट में रुके, जहाँ डॉक्टरों ने उन्हें कुछ समय के लिए आराम करने की सलाह दी थी। स्वामीजी की दिव्य प्रतिभा और आकर्षण ऐसा था कि रिसॉर्ट के सभी कर्मचारियों के साथ-साथ प्रयासविनभाई स्वामीजी के करीबी दोस्त बन गए। अंत में जब स्वामीजी विदाई ले रहे थे तो माहौल भावुक हो गया। स्वामीजी गाड़ी में बैठे। प्रयासवीनभाई और अन्य कर्मचारी बाहर खड़े थे। स्वामीजी ने कार की खिड़की खोली। प्रयासवीनभाई ने आकर संतोष व्यक्त किया और कहा, 'मैं चाहता था कि आप यहां आराम करें और जब आप यहां आए, तो मैं आपका मुस्कुराता हुआ चेहरा देखना चाहता था, मेरी इच्छा पूरी हुई।'

स्वामीजी ने कहा, 'अगर साधु-संतों की कुछ गलती हुई हो अथवा यहां दर्शन के लिए आते हरिभक्तों, जो इस तरह के अनुशासन के आदी नहीं हैं, की गलती हुई हो तो हम उनकी ओर से क्षमा चाहते हैं।' वहां हुई एक घटना स्वामीजी के माफी मांगने का कारण थी।

बात कुछ ऐसी थी कि स्वामीजी की प्रात:काल पूजा के दर्शन के लिए हरिभक्त प्रतिदिन रिसॉर्ट में आते थे। कुछ हरिभक्तों ने जल्दबाजी में अपने वाहन अनुचित स्थानों पर खड़े कर दिए और दर्शन के लिए पहुंच गए। चौकीदार ने मना भी किया, फिर भी कुछ लोगों ने नहीं सुनी। एक बार प्रयासवीनभाई वहां से निकले तो देखा कि गाड़ियां गलत जगह खड़ी हैं। तो उसने पहरेदार को बुलाकर कहा, 'तू ध्यान क्यों नहीं देता?' पहरेदार ने कहा, 'महाशय! मैं बहुत कुछ कहता हूं, लेकिन जो लोग यहां आते हैं, वे मेरी बात नहीं मानते।'

लेकिन अनुशासन पर जोर देने वाले प्रयासविनभाई को उसकी बात अच्छी नहीं लगी। चौकीदार की लापरवाही जानकर उसने तुरंत उसे नौकरी से निकाल दिया। इस घटना की खबर फैलते ही स्वामीजी तक पहुंच गई। इस विदाई में स्वामीजी ने इस संबंध में क्षमा याचना की। अंत में स्वामीजी ने धीरे से उनसे कहा, 'गलती उन लोगों की थी जो दर्शन करने आए थे, चौकीदार की नहीं। तो हो सके तो उस चौकीदार को वापस नौकरी में रख लेना।' प्रयासविनभाई को इस बात का अंदाजा नहीं था कि स्वामीजी ऐसा कहेंगे। वे तुरंत कहते हैं, 'हाँ, स्वामी! मैं इसे नौकरी में रख लूंगा।'

स्वामीजी के इस कोमल हृदय का प्रयासविनभाई के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। पहरेदार को शायद इस बात का अंदाजा भी न हो कि दुनिया के एक संत उसकी इतनी देखभाल कर रहे हैं और दूसरे की ओर से माफी मांग रहे हैं!

स्वामीजी ने उकाई में आदिवासी बच्चों के लिए नि:शुल्क छात्रावास की स्थापना की। स्वामीजी गरीब आदिवासी बच्चों की नि:शुल्क देखभाल करते थे। 1986-87 में लगभग एक बार स्वामीजी इस छात्रावास में आए थे। बच्चों की देखभाल के बारे में स्वामीजी ने संचालकों से कई प्रश्न पूछे और विस्तृत जानकारी प्राप्त की। जब स्वामीजी ने भोजन के बारे में पूछा, तो प्रबंधक ने कहा: 'हम रोज सुबह पाउडर दूध देते हैं।'

स्वामीजी ने तुरंत पूछा: 'क्या सभी बच्चों को वह दूध रास आता है? सब पीते हैं?'

प्रबंधक ने कहा, 'कुछ बच्चों को यह पसंद नहीं आता, इसलिए वे दूध नहीं पीते हैं।'

बच्चों का सही ढंग से विकास हो यह सोचते हुए स्वामीजी ने कहा कि 'हमें बच्चों को गाय या भैंस का ताजा दूध देना चाहिए ताकि कोई भी बिना पिए न रहे।'

उसके बाद स्वामीजी ने बच्चों के हर कमरे का दौरा किया। पलंग, गद्दा, चादर आदि देखें। बिस्तर पर लगे कंबल को भी छुआ और उसकी जांच की। कंबल देखकर स्वामीजी ने कहा, 'ये कंबल ठंड न लगे ऐसे फक्कड़ हैं, परन्तु उसे खुला न रहने दें, खुरदरा होने से उसके पर सूती खोल लगा

देना। इसलिए कि जब बच्चे सो जाएँ, तब उन्हें गाल पर चोट न लगे।' आदिवासी बच्चों की इतनी परवाह किसे है!

कुछ साल बाद 1989 में इस छात्रावास के बच्चे स्वामीजी के दर्शन करने सांकरी गए। वहां बच्चों ने स्वामीजी के समक्ष धुन और प्रार्थना गाई। तब भी स्वामीजी ने प्रशासक श्री कैलासभाई से पूछा, 'आप इन बच्चों को सुबह का नाश्ता क्या देते हैं?'

'आलू-चिड़वे, उबले चने और दूध।'

'दूध कैसा आता है?'

'अपेक्षाकृत ठीक है?'

'ऐसा क्यों होता है? भुगतान कम करते हैं?'

'हम अच्छा भुगतान करते हैं...!'

'फिर दूध लेते समय ठीक से देखें। लड़कों का स्वास्थ्य खराब नहीं होना चाहिए। शरीर अच्छा हो, पढ़ाई अच्छी हो और संस्कार अच्छा मिले - इन तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए।' स्वामीजी की अधिसूचना में कई विषय थे! कंबल से लेकर दूध, संगीत और शिक्षापत्री और गीता के श्लोकों तक! गरीब अबुध आदिवासी बच्चों को शायद इस बात की जानकारी नहीं होगी कि स्वामीजी उनके सर्वांगीण विकास और उज्ज्वल भविष्य की कामना कर रहे थे!

आमतौर पर इंसान के लिए बिना किसी को बताए दूसरों का हित करना बहुत मुश्किल होता है, लेकिन स्वामीजी की बात अलग थी। उन्हें सार्वजनिक प्रशंसा या प्रसिद्धि की कोई इच्छा नहीं थी। इसलिए यह उनके लिए सहज था।

वर्ष 2005 में दिल्ली में अक्षरधाम मंदिर का भव्य उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया था। देश-विदेश से हजारों की संख्या में श्रद्धालु और गणमान्य लोग वहां इंतजार कर रहे थे। भारत के प्रख्यात व्यवसायियों से लेकर प्रधानमंत्री-राष्ट्रपति तक कई गणमान्य व्यक्तियों को इस गौरवशाली उत्सव में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। स्वामीजी उत्सव की सभाओं और गणमान्य व्यक्तियों से मिलने में बहुत व्यस्त थे, लेकिन इस सब व्यस्तता के बीच भी वे सबसे छोटे आदमी की सेवा करने से नहीं चूके। इस अक्षरधाम उत्सव के दौरान एक अमेरिकी महिला का पत्र आया था। इसमें कहा गया था, 'जब हम दिल्ली आए तो मेरा स्वेटर वहीं निवास पर रह गया है। इसमें 500 डोलर और दवा है। अगर मिल जाए तो भेज दो।' कितनी तुच्छ बात है! लेकिन स्वामीजी किसका नाम है ! उनके लिए हरिभक्त की छोटी से छोटी समस्या भी महत्वपूर्ण थी। और पत्र लेखक को स्वामीजी पर कितना भरोसा होगा! स्वामीजी ने श्री महेंद्रभाई पटेल को बुलाया, जो त्योहार के दौरान भक्तों के निवास के प्रभारी थे, और उनसे स्वेटर की जांच करने के लिए बात की। महेंद्रभाई ने खोजा और आखिर में स्वेटर मिल ही गया। स्वेटर, पैसे और दवा के साथ, हरिभक्त के द्वारा दिल्ली से वापस अमेरिका भेजा गया था। लेकिन वस्तु असली मालिक तक नहीं पहुंची क्योंकि यह किसी दूसरी मिलती-जुलती एक महिला को दी गई थी। यह खबर मिलने पर स्वामीजी ने फिर से जाँच की। तब लगभग दो महीने बीत चुके थे। स्वामीजी जब अटलदरा पहुंचे तो उन्होंने महेंद्रभाई को देखा, तो उन्होंने तुरंत स्वेटर के बारे में पूछताछ की। महेंद्रभाई ने भी स्वामीजी को स्वेटर की चिंता करते देखा और सोचा कि स्वामीजी हरिभक्तों की कितनी परवाह करते हैं! महेंद्रभाई ने स्वामीजी को सारी स्थिति समझाई। अंत में स्वामीजी ने कहा, 'अगर वह बहन संतुष्ट नहीं है, तो दूसरा एक और स्वेटर और 500 डोलर भेज दो।'

गीता में, भगवान कृष्ण ने एक विशेषण 'सर्वभूतहिते रता:' का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है 'केवल सभी जीवों के हित में रममाण', यह लक्षण ब्राह्मी स्थिति से संपन्न संत की विशेषता को दर्शाता है। स्वामीजी को देखकर लगता है कि यह विशेषण उन्हीं के लिए लिखा गया था। वे बिना किसी भेदभाव के सभी के हितों की सेवा के लिए तैयार थे।

1974 में अपनी विदेश यात्रा के दौरान, स्वामीजी लंदन में सत्संगी हरिभक्त चंदूभाई के घर गए। चंदूभाई ने पड़ोस में रहने वाले लोगों को भी निमंत्रण भेजा। तो उसका पड़ोसी एक अंग्रेज भाई स्वामीजी के दर्शन करने आया। स्वामीजी का इस अंग्रेज सज्जन से कोई परिचय नहीं था। इसके अलावा, हालांकि भाषा का आवरण भी था, फिर भी स्वामीजी अपने स्वभाव से, उस बुजुर्ग अंग्रेजी पड़ोसी से परिचित होने लगे। बातचीत के दौरान, स्वामीजी को एहसास हुआ कि वह बिल्कुल अकेले हैं। पत्नी नहीं है। बेटे उन्हें छोड़कर चले गए हैं। पिछला जीवन दु:खों से गुजर रहा है।

स्वामीजी को उनका दर्द सुनकर दया आ गई। उन्होंने एक संनिष्ठ सत्संगी युवक चंदूभाई से अनुरोध किया, 'अगर वह पड़ोस में रहता है, तो आपको उसकी देखभाल करनी होगी।'

स्वामीजी की बातों में नमी थी। चंदूभाई ने स्वामीजी की आज्ञा का पालन किया। दस साल बाद 1984 में जब स्वामीजी लंदन पहुंचे तो चंदू भाई अपने पुराने अंग्रेज भाई को साथ लेकर स्वामीजी से मिलने आए। स्वामीजी ने उस बुजुर्ग को पहचान लिया। वे स्वामीजी को धन्यवाद देने के लिए विशेष रूप से आए थे। स्वामीजी के अनुसार चंदूभाई पिछले दस वर्षों से हर संभव तरीके से उनकी देखभाल कर रहे

थे। स्वामीजी की परोपकारी करुणागंगा ने ऐसे कितने बेसहारे मनुष्यों की देखभाल की होगी!

स्वामीजी की कृपा और करुणा का पात्र होने की योग्यता क्या है? कुछ नहीं, बस उन्हें मदद के लिए बुलाओ ताकि वे मदद के लिए तैयार ही होंगे। पहचान की कोई जरूरत नहीं है।

जनवरी 2005 में धर्मपुर के एक अज्ञात मुसलमान ने स्वामीजी को पत्र लिखकर मदद मांगी। पत्र में उन्होंने लिखा: 'मैं एक नाई हूं। मेरे पास फिलहाल कोई पूंजी नहीं है। मैं बाल काटने के लिए एक दर्पण, एक कंघी, एक कुर्सी और एक बेंच किराए पर लेता हूं। अगर आप मेरी मदद करेंगे तो मेरा जीवन सुखमय हो जाएगा।' स्वामीजी का पत्रलेखक से कोई परिचय नहीं था। लेकिन स्वामीजी की संतत्व की महिमा रही है कि यदि कोई अजनबी भी यह मान ले कि 'अगर वे मुझे नहीं भी जानते हैं, तो भी यह संत मेरी मदद करेगा।'

और ऐसा हुआ भी। पत्र पढ़ने के तुरंत बाद स्वामीजी ने स्थानीय प्रबंधक को बुलाया और उनके माध्यम से एक गरीब परिवार को आवश्यक धनराशि भेजने की व्यवस्था की। लेकिन बात यहीं नहीं रुकती। चूँकि स्वामीजी उस दिन सेलवास से मुंबई के लिए निकलने वाले थे, प्रबंधक अंतिम घंटों में व्यस्त हो गए और मदद भेजना भूल गए।

पांच दिन बाद, प्रबंधक को मुस्लिम कॉमरेड इस्माइल मुहम्मद खलीफा से एक पोस्टकार्ड मिला: 'महेरबान मानवंत, जय श्री स्वामिनारायण। मैंने परम पूज्य गुरुदेव श्री प्रमुखस्वामी से विनम्र अनुरोध के लिए एक पत्र लिखा था। जब मैं सेलवास पहुँचा तो मेरी मदद करने के लिए शायद गुरुदेव ने अगर आपको मेरी मदद करने के लिए कहा है, तो आप सही मार्गदर्शन लिखकर मुझे धन्यवाद देने के लिए समय निकालेंगे।' जब वे मदद करने के बारे में सोच रहे थे, तो उन्हें उसी तारीख का एक और पोस्टकार्ड मिला: 'जय श्री स्वामिनारायण। कृपया, विश्व प्रसिद्ध परम पूज्य श्री प्रमुखस्वामी महाराज ने मेरी विनती स्वीकार कर ली और मुझे रुपये की मदद की है। 1700/- भेज दिया गया है, जो मुझे आज दोपहर एक बजे डाक द्वारा प्राप्त हुआ। मुझे समझ में नहीं आता कि मैं उन्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूं! मैंने पहले जो पोस्टकार्ड लिखा था उसे रद्द मानना। अब मुझे मदद मिल गई है। मैं उनके स्वास्थ्य के लिए ख़ुदा से प्रार्थना करता रहूंगा। शुक्रिया...!'

एक मुस्लिम समुदाय के इन दो पोस्टकार्डों में स्वामीजी के अगाध स्नेह के साथ-साथ उनकी करुणा और चपलता भी सुनी जा सकती है। स्वामीजी को एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने मदद मांगी थी। 5 जनवरी को। मनीआर्डर के जरिए व्यक्ति तक पैसे पहुंचने में दो-तीन दिन लग जाते हैं। हालांकि ता. 10 जनवरी की दोपहर जरूरतमंद तक पैसा पहुंच गया! स्वामीजी को कैसे पता चला कि प्रबंधक को सौंपा गया काम वह भूल गया है?! मुंबई जैसे महानगरीय शहर में अपने स्वागत की जय-जयकार के बीच भी किसी एक कोने में रहने वाले एक अजनबी के दु:ख को वो कम करना नहीं भूले!

इस घटना के वर्षों बाद, जब प्रमुख स्वामी महाराज की जीवनी लिखी जा रही थी, तब संत इस मुस्लिम की खबर लेने के लिए उनकी दुकान पर पहुंचे, किन्तु उन्हें पता चला कि इस्माइलभाई की मृत्यु हो गई थी, लेकिन उनके बेटे दुकान चला रहे थे। नवागंतुकों से विवरण जानने के बाद, उनके बेटों ने उस समय कहा, 'हमारे अब्बाजान ने हमेशा हमें बताया कि यह हमारी दुकान है, इसमें प्रमुखस्वामी बापा ने बहुत मदद की है। और जो दुकान हम चलाते हैं वह उन्हीं की कृपा से चलती है।'

स्वामीजी की विशेषता यह थी कि बिना कहे भी वे सदैव सभी का हित करते थे। जिस प्रकार नदी को पवित्र करने के लिए नहीं कहा जाता है, जो नदी में गोता लगाता है वह पवित्र हो जाता है, वैसे ही स्वामीजी के योग में जो कोई आता है उसका श्रेय हो ही जाता था।

अहमदाबाद में अक्षरपीठ प्रेस ने एक साधारण परिवार के एक मूक-बधिर युवक को रोजगार दिया। स्वामीजी ने मंदिर में उसके ठहरने, भोजन आदि की सभी व्यवस्था की। उसका नाम प्रवीण था, लेकिन शिक्षा की कमी के कारण उसे वित्तीय नियोजन में दक्षता नहीं थी। फिल्में देखने का बहुत शौक था। वह अपना वेतन फिल्मों और अन्य बेकार गतिविधियों में बर्बाद कर देता था। लेकिन स्वामीजी के साथ उसका रिश्ता अलग था। चतुराई और लगन से काम करने के कारण स्वामीजी उसे चतुर कहते थे। इसे आज भी इसी नाम से जाना जाता है।

एक बार जब स्वामीजी अमदाबाद में थे, अपने निवास की ओर आ रहे थे, तो उन्हें रास्ते में यह चतुर मिला। हमेशा की तरह स्वामीजी हाथ के इशारों से उससे संवाद करने लगे। स्वामीजी ने कहा, 'मुझे अपने वेतन का हिसाब दिखाओ।' चतुर चिंतित हो गया, क्योंकि वह खाता लिखे बिना वेतन की सारी राशि का उपयोग कर रहा था। स्वामीजी उसकी दशा देखकर भावर्द्र हो गए। उसे फिल्में न देखने का नियम दिया। संस्थान के सचिव हरीशभाई को बुलाकर स्वामीजी ने उन्हें केवल पॉकेट मनी देने की व्यवस्था की, बाकी वेतन उसके

गरीब आदिवासियों को कपड़े दान करने से लेकर स्वामीजी ने उनके बच्चों का भी ख्याल रखा...

बैंक खाते में जमा किया जाए। उन्होंने चतुर को भी मना लिया। अंत में स्वामीजी हरीशभाई से कहते हैं, 'इस बेचारे को बुढ़ापे में धन का सहारा हो जाए!'

एक तरफ चतुर ने कल की भी परवाह नहीं की, जब स्वामीजी को उसके बुढ़ापे की चिंता थी!

जिस प्रकार अनजाने में वृक्ष की छाया में बैठने वाले को वृक्ष शीतलता प्रदान करता है, उसी प्रकार स्वामीजी की शीतल छाया में आए अजनबियों के दर्द को स्वामीजी स्वाभाविक रूप से दूर कर देते थे।

1986 की एक शाम मुंबई में एक मजदूर जैसा आदमी आया और स्वामीजी के द्वार पर खड़ा हो गया। लघुत्व से पीड़ित होकर वह अपने पैर अंदर करने से भी झिझक रहा था। स्वामीजी उसको सामने से बुलाया और उसका नाम पूछा। पूछताछ करने पर पता चला कि वह एक आम के व्यापारी की दुकान से आम का टोकरा भेजने आया है।

स्वामीजी इस अपरिचित मजदूर से विस्तार से सब कुछ पूछने लगे। पता चला कि इस तरह का चक्कर लगाने के लिए उसे दस रुपये मिल रहे थे। लेकिन करम की मुश्किल यह है कि वह एक दिन में दो से ज्यादा फेरे नहीं लगा पाता था। उसका मूल स्थान उत्तर प्रदेश था, लेकिन उसे वहां नौकरी नहीं मिली, इसलिए उसने अपनी मातृभूमि छोड़ दी और यहां मुंबई में बस गया। माता-पिता भी गरीब हैं। अध्ययन के बारे में पूछने पर पता चला कि वह एक होम्योपैथिक डॉक्टर है, लेकिन संयोग से कहीं नौकरी नहीं मिली। अस्पताल खोलने के लिए आर्थिक व्यवस्था नहीं थी। युवक की कहानी वाकई चौंकाने वाली थी। उसने कहा, 'मैं वडाला में रहता हूं। मेरे जैसा दुखी कोई नहीं है।' बोलते हुए उसको सिसकी आ गई।

स्वामीजी ने एक पल में इससे छुटकारा पाने का उपाय सोचकर कहा कि 'तुम्हारा सर्टिफिकेट लेकर तुम कल शाम को यहां आना!' फिर स्वामीजी ने संतों को कहा, 'हमारे सत्संगी डॉक्टरों से पूछ कर उसके वहां उसे नौकरी दी जाए।' स्वामीजी ने संतों से यह भी कहा, 'इसे भोजन कराएं, फिर विदा करें।' जब वह खाने के लिए बैठा तो वह रोता रहा और कहता रहा, 'मैं स्वामीजी को कभी नहीं भूलूंगा।'

स्वामीजी ने उसे सत्संगी चिकित्सक के क्लिनिक में नियुक्त कर दिया।

स्वामीजी का स्वभाव ऐसा था कि वे अपने शरीर या व्यवस्था की देखभाल छोड़कर दूसरों के सुख-सुविधाओं की संभावना करते थे। 1986 में स्वामी पूज्य पांडुरंग शास्त्री जी के निमंत्रण पर प्रयागराज पहुंचे! संयोग से, उसी समय गुजरात के नानी वावड़ी गांव के हरिभक्त जात्रा के अवसर पर प्रयागराज पहुंचे थे। यह जानकर कि स्वामीजी भी यहाँ हैं, भक्त स्वामीजी के दर्शन करने आए। जब स्वामीजी ने सबको भोजन के बारे में पूछा तो हरिभक्तों ने अपनी समस्या व्यक्त की। ऐसा हुआ कि यात्रा के आयोजक ने शुरू में सभी के लिए नाश्ता और खाना देने पर सहमति व्यक्त की, लेकिन फिर वह पलटी मार गया और भोजन देने से इनकार कर दिया। हरिभक्तों ने जो थोड़ा सा चावल अपने साथ लिया था वह भी अब समाप्त हो गया था। सभी भक्त थे इसलिए बाजारू नहीं खाते थे। स्वामीजी उनकी स्थिति को जानते थे और उन्होंने तुरंत उनको दुःख से उबारने का फैसला किया।

स्वामीजी जब दिल्ली से प्रयागराज पहुंचे तो सेवकों ने ठाकोरजी, स्वामीजी और संतों के लिए पांच दिन का सूखा नाश्ता तैयार करके साथ में ले लिया था। स्वामीजी ने उन संतों से कहा: 'चलो ठाकोरजी के भोग जितना रखकर शेष सब कुछ हम इन हरिभक्तों को दे दें।'

स्वामीजी की ऐसी करुणा देखकर हरिभक्त चकित रह गए। उस दुर्लभ गुरु को धन्यवाद देने के लिए शब्द कम लग रहे थे, जिन्होंने अपने भोजन की चिंता छोड़ दी और दूसरों की

क्षुधा को शांत किया। सभी मूक भाव से मन ही मन स्वामीजी के चरणों में झुक गए।

ऐसा ही अनुभव 1977 में स्वामीजी के साथ यात्रा में शामिल जगदीश को हुआ था। स्वामीजी जब अहमदाबाद पहुंचे तो जगदीश बीमार हो गया था। शीत ऋतु था। सर्दी थी। उसके साथ के युवकों ने उसे ढकने के लिए अधिक रजाई ढूंढ़ने की कोशिश की, लेकिन रजाई कहीं मिल नहीं रही थी। तो सभी चिंतित थे। आधी रात के बाद सभी को अचंभित करते हुए स्वामीजी इन युवकों के निवास पर आए। उनके हाथों में रजाई थी। उन्होंने युवकों को रजाई सौंपते हुए कहा, 'उसे ओढ़ा दो।' रजाई देते ही वे नीचे चले गए।

रजाई पाकर युवा खुशी से झूम उठे। लेकिन वे तब चौंक गए जब सुबह उन्हें पता चला कि स्वामीजी ने नवयुवकों को अपनी रजाई दे दी थी! और स्वयं रात भर ठंड में सिर्फ उपवस्त्र ओढ़कर सो गए थे! दूसरों की देखभाल करने वाले कदाचित थोड़े बहुत मिल सकते हैं, लेकिन जो स्वयं को सहन करके दूसरों की देखभाल करें, वैसे स्वामीजी जैसे मिलने दुर्लभतम हैं।

हिंगटिया खेडब्रह्मा के पास एक छोटा सा गांव है। गांव में आदिवासियों का निवास है। वर्ष 2000 में इस सुदूर गांव के एक आम आदिवासी ने स्वामीजी को एक पत्र लिखा था। स्वामीजी उस समय अमेरिका में थे। पत्र प्राप्त होने पर स्वामीजी ने उसे पढ़ने का प्रयास किया, लेकिन वह पत्र के अक्षर बहुत ही गड़बड़िया होने के कारण हल नहीं हो सका। फिर भी स्वामीजी दस मिनट तक सुलझाते रहे। संतों ने भी कोशिश की, लेकिन असफल रहे। लेकिन स्वामीजी यहीं नहीं रुके। यह एक परोपकारी संत थे! परिस्थितियाँ इन्हें कहाँ रोक सकती हैं? डाक के सिक्के की जाँच करने पर स्वामीजी को पता चला कि चिट्ठी खेड़ब्रह्मा की ओर स्थित हिंगटिया गाँव से आई है।

इसलिए स्वामीजी ने वहां विचरण करते श्रीरंगदास स्वामी से फोन जोड़ा। लेकिन गांव में सत्संग के लिए जाने के कारण उनसे संपर्क नहीं हो सका। उस समय मोबाइल का जमाना नहीं था। तो स्वामीजी ने हिम्मतनगर मंदिर से कहा कि श्रीरंगदास स्वामी के वापस आने पर हमें फोन करने को कहिए।

जब श्रीरंगदास स्वामी ने पड़ताल की तो वह गांव के एक आदिवासी रेशमा पारघी का पत्र था। उनके गांव का हैंडपंप टूट गया था। पूरा गांव हैंडपंप से पानी पंप कर रहा था। बंद होना ग्रामीणों के लिए एक बड़ी समस्या थी। ये बेचारे आदिवासी भाई कई दिनों से सोच रहे थे कि कौन हमारी मदद करेगा। रेशमा पारघी ने आखिरकार बिना कोई उपाय सोचे स्वामीजी को एक पत्र लिखा।

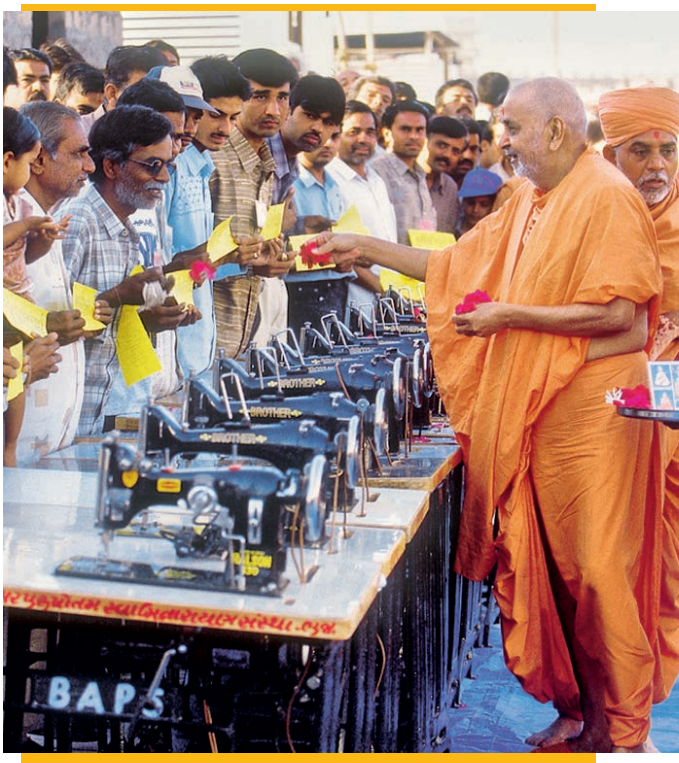

स्वामीजी की करुणा ने भूकंप पीड़ितों को आजीविका के साधन देकर उनकी मदद की।

जब श्रीरंगदास स्वामी ने इस बात की जानकारी दी तो स्वामीजी ने तुरंत आदेश दिया कि आप स्वयं जाकर हैंडपंप का निरीक्षण करें, उसकी मरम्मत करवाएं... और यदि आवश्यक हो, तो एक नये पंप की व्यवस्था करें। स्वामीजी के आदेशानुसार संतों के प्रयास से हिंगटिया गांव का हैंडपंप पुनः सक्रिय हो गया। आज गुजरात के एक कोने में स्थित हिंगटिया के आदिवासी ग्रामीण हैंडपंप से पानी पीते हुए स्वामीजी की करुणा का अमृत पीते हैं।

चाहे गांव का हैंडपंप टूटा हो या बच्चे का नामकरण, व्यावसायिक उपकरण लगाना हो या किसी की शिक्षा की चिंता करना, प्रमुखस्वामी महाराज हर किसी की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

जामनगर में रिलायंस में सीनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत बिपिनभाई चावड़ा भी स्वामीजी को धन्यवाद देते हुए भावुक हो जाते हैं। बिपिनभाई का पैतृक गांव अमरेली क्षेत्र का खांभा है। 1988 में, वह खांभा हाई स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, तब उनके पिता को अचानक दिल का दौरा पड़ा

और वे अनपढ़ रह गए। छोटे से बिपिन ने एक बेहतर करियर का सपना देखा था, लेकिन पिता के आकस्मिक निधन से वो सारे सपने टूटते नजर आए। 'मैं अभी भी पढ़ना चाहता हूं, लेकिन अपने पिता की छत्रछाया के बिना कैसे पढ़ूं?' उन्होंने अपना दुखड़ा गांव के सत्संग-कार्यकर्ता के सामने रखा। कार्यकर्ता ने कहा कि यदि आप प्रमुखस्वामी महाराज से मिलते हैं, तो बापा सब कुछ संभल लेंगे।

कार्यकर्ता के सुझाव पर 2 मई 1989 को बिपिन स्वामीजी से राजकोट में मिला। स्वामीजी उनके साथ आधे घंटे तक बैठे रहा। एक बेसहारा बच्चे के सारे दुख चुपचाप सुन रहे थे। उन्होंने तुरंत ज्ञानप्रसाद स्वामी और गुरुकुल के प्रशासकों को गोंडल में संस्थान के आवासीय विद्यालय में बिपिन के लिए 10 वीं कक्षा में मुफ्त ट्यूशन और आवास के लिए एक आदेश पत्र लिखा। बिपिन स्वामीजी के स्नेही चेहरे की ओर देख रहा था। उसे लगा कि 'मेरे पिता कहीं नहीं गए हैं, वह मेरे सामने स्वामी बापा के रूप में बैठे हैं।'

पत्र लेकर वह गोंडल पहुंचा और उसकी सारी व्यवस्था नि:शुल्क की गई। उसके बाद 11वीं कक्षा के लिए स्वामीजी ने ही उसको विद्यानगर में अध्ययन करने की सिफारिश की। इतना ही नहीं, जब जीवन में संकट आए, तो उसे हिम्मत देकर, कभी व्यक्तिगत रूप से तो कभी पत्रों के माध्यम से भी स्वामीजी ने मार्गदर्शन दिया। समय के साथ बिपिन के सारे सपने सच हो गए। आज तीस साल बाद, स्वामीजी के आशीर्वाद को याद करते हुए, बिपिनभाई कहते हैं, 'यह उनका प्रताप था जिसने मुझे एक इंजीनियर बनने और कई संघर्षों से जूझने में सक्षम बनाया। आज मेरे पास तीन इमारतें हैं। जी भर के खुश हूँ। आज मैं जो कुछ भी हूं, स्वामीजी की कृपा से हूं। यदि प्रमुखस्वामी महाराज मेरे जीवन में न होते तो मुझे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। हम उन्हें 'बापा' कहते हैं क्योंकि वह हमारे पिता हैं। हम सोचते हैं कि कलियुग में कोई भगवान नहीं है, लेकिन इस संतरूप में केवल भगवान हैं।'

बिपिनभाई के जैसी ही परिस्थिति उसी खंभा गांव के योगेश वंद्रा की थी। उसके पास पढ़ने का साधन नहीं था। 1988 में जब प्रमुखस्वामी महाराज योगेश के घर आए तो स्वामीजी ने योगेश की शिक्षा के बारे में पूछताछ की। गांव में 10वीं तक पढ़ने वाले इस किशोर को नहीं पता था कि उसे 10वीं के बाद भी कुछ सीखना है! स्वामीजी ने उसे विद्यानगर जाकर आगे की पढ़ाई करने को कहा, लेकिन आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़ा परिवार शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर सकता था। स्वामीजी ने कहा, 'लागत की चिंता मत करो। हम इसकी व्यवस्था करेंगे। तुम बस पढ़ाई करो।'

स्वामीजी ने उसके प्रवेश और पढ़ाई के खर्च की सारी व्यवस्था की। उन्होंने विद्यानगर स्थित संस्थान के छात्रावास में नि:शुल्क आवास भी उपलब्ध कराया। योगेश विद्यानगर पहुंचा, लेकिन पहली बार गांव छोड़कर विद्यानगर गया यह किशोर लगातार हीन भावना से पीड़ित था। उसे छात्रावास पसंद नहीं था। जब स्वामीजी विद्यानगर पहुंचे तो योगेश का समाचार सुनकर स्वामीजी ने उसे मिलने के लिए बुलाया।

स्वामीजी ने पूछा, 'क्या पसंद नहीं है?'

योगेश कहते हैं, 'मुझे खाना पसंद नहीं है.'

स्वामीजी ने तीन साल पहले के अवसर को याद करते हुए कहा, 'पहले, तो तुम गाठिया और मिर्च नहीं खाता था, अभी खा सकते हो न?'

योगेश बोला, 'हाँ, बापा! इसे खाया जाता है।'

'जैसे वह पसंद आ गया है, तो यह भी धीरे-धीरे रास आ जाएगा। कोई और समस्या है?'

'स्वामीजी! मेरे पास स्कूल जाने के लिए साइकिल नहीं है।'

स्वामीजी ने तुरंत उसके लिए साइकिल की व्यवस्था की। अंत में योगेश ने अपने मूल चिंता को प्रस्तुत करते हुए कहा, 'बापा, मुझ पढ़ाई से बहुत डर लगता है। जब मैं परीक्षा देने जाता हूं तो डर के मारे सब कुछ भूल जाता हूं। मुझे आश्चर्य है कि मेरा क्या होगा? मैं क्या करूंगा... ऐसे विचार आया करते हैं।'

स्वामीजी भावार्द्र बन गए और बोले, 'भला मानूस! मरने से पहले कब्र खोदी जाती है क्या? क्या तुम जानते हो कि कल क्या होने वाला है? तो ऐसे नकारात्मक विचार दिमाग में क्यों लाएं? ऐसे विचार कभी न रखें। मरने से पहले क्या किसी ने कब्र खोदी होगी?'

स्वामीजी के ये शब्द योगेश के हृदय को छू गए। फिर पूरे जोश और उत्साह से उन्होंने अध्ययन यज्ञ प्रारंभ किया। नतीजा यह रहा कि 10वीं में 60 फीसदी अंक लाने वाला योगेश 12वीं में 84 फीसदी अंकों के साथ पास हुआ। स्वामीजी ने उन्हें आगे पढ़ाया और उन्हें इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर बना दिया। स्वामीजी ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें नौकरी देने की भी सिफारिश की। इस प्रकार, प्रमुखस्वामी महाराज ने एक साधारण ग्रामीण किशोर को पढ़ाई से लेकर नौकरी करने के लिए प्रेरित करने से लेकर हर चीज का ध्यान रखा। स्वामीजी की कृपा को याद करते हुए योगेशभाई ने कहा, 'आज मैं अपने घर में पैर रखता हूं तो

बापा की याद मुझे आती है कि दोपहरी नींद छोड़कर उन्होंने मुझे इस घर को लेने या न लेने के लिए मार्गदर्शन दिया था! जब मैं अपने बच्चों को देखता हूं, तो मुझे उनके भविष्य की चिंता नहीं होती है, क्योंकि मुझे यकीन है कि मेरे स्वामीजी को मेरे बच्चों के बारे में उतनी ही चिंता होगी जितनी वह मेरे बारे में करते थे।

ऐसे कई घटनाएँ भी हैं जिनमें स्वामीजी ने संपत्ति के बंटवारे के लिए घंटों-घंटों को समर्पित किया है ताकि भाइयों के बीच कोई दरार न हो और परिवार बिखर न जाए। स्वामीजी की कृपा से नाडियाद के चिरागभाई देसाई के परिवार में भी कुछ ऐसा ही हुआ। अपने दादा नागिनभाई की मृत्यु के बाद, परिवार में धन के वितरण में एक बड़ी समस्या थी। दादाजी ने कुछ संपत्ति साझा की, लेकिन कई संपत्तियां साझा की जानी बाकी थीं। इसके अलावा, दादा की उपस्थिति में कोई लेखन नहीं किया गया था, जिससे परिवार में शेष संपत्ति के वितरण के संबंध में गंभीर समस्या पैदा हो गई थी।

चिरागभाई के पिता अक्षरवासी हो गये थे। इससे उनके और उनके दो चाचाओं के बीच संपत्ति के बंटवारे को लेकर विवाद हो गया। उन्होंने एक-दूसरे ने दादा के मकान पर ताला लगा दिया। सब अलग रहते थे। बिखरा हुआ था पूरा परिवार। जब यह खबर कुछ हरिभक्तों के माध्यम से स्वामीजी तक पहुंची तो स्वामीजी ने परिवार के सभी सदस्यों को बोचासन बुलाया।

सभी बोचासन पहुंचे। लगातार तीन दिनों तक स्वामीजी ने सभी प्रस्तुतियों को धैर्यपूर्वक सुना। स्वामीजी सुबह से साढ़े बारह बजे तक बैठते, और वे दोपहर से शाम तक फिर बैठते! स्वामीजी ने भवन, भूमि, अन्य संपत्ति आदि से लेकर हर चीज में रुचि ली। भूमि और भवन के मामले में स्वामीजी ने एक उपाय सुझाया, 'एक भाई को सारी संपत्ति का मूल्य निर्धारित करके सब कुछ खरीदना चाहिए और उस राशि के बाद उसे तीन भागों में विभाजित करना चाहिए।' यह समाधान सभी को पसंद आया। तीनों ने पत्र में भूमि-निर्माण की कीमत लिखी। बड़े चाचा ने ज्यादा कीमत लिखी थी, उसी के अनुसार वह कीमत निर्धारित की गई और सभी को समान रूप से धन वितरित किया गया। इस तरह एक बड़ी समस्या को सुलझा दिया।

साथ ही काफी सारा सोना, जेवर, नकदी, बर्तन आदि बांटना बाकी था। इसके लिए स्वामीजी ने महंत स्वामी को हरिभक्तों के घर जाकर सब कुछ बांटने का आदेश दिया। स्वामीजी की आज्ञा से महंत स्वामीजी वहाँ गए। सभी वस्तुओं

आतंकवाद में घायल हुए एक सैनिक के आंसू पोंछते हुए करुणामय स्वामीजी ने उसे आश्वस्त किया...

को सूचीबद्ध किया। फिर उसने उसे तीन बराबर भागों में बाँट दिया। अंत में वातावरण इतना हल्का हो गया है कि सबसे छोटी सी बात के लिए, हर कोई मुस्कुराता है और मामूली वस्तु के बारे में भी हंसी मजाक में कहते हैं, 'चलो तीन भाग करते हैं!'

स्वामीजी के इस उपकार को याद करते हुए चिरागभाई आज कहते हैं, 'यदि स्वामी बापा ने रुचि न ली होती तो हम कोर्ट कचहरी-आफिस चले जाते और सारी संपत्ति नष्ट हो जाती। हमारे पास कुछ नहीं बचा होता। अदालत का दौरा पड़ने से मर गये होते। शायद आज भी कोर्ट का धक्का चालू होता। इसके बजाए, सब कुछ शांतिपूर्वक समाप्त हो गया। प्रमुखस्वामी महाराज ही आज सभी भाइयों के बीच सौहार्द, अच्छे संबंध और प्रसन्नता का कारण है।'

अडवाल गांव के भैलूभा बापू भी ऐसी ही एक घटना को याद करते हुए कहते हैं, ''आज से पंद्रह-सत्रह साल पहले घास के बंटवारे को लेकर हमारा विवाद हो गया था। इसकी खबर मिली तो स्वामी बापा ने सभी को बुलाया। मैंने कहा, 'स्वामीजी! ऐसे में हमें आपको परेशान नहीं करना चाहिए।' तो स्वामी बापा बोले, 'हमें अपने सत्संगियों के परिवार में परेशानी पसंद नहीं है, इसलिए हम चाहते हैं कि आप सभी एक साथ आएं और सभी के बीच एक समझौता करें।'

फिर स्वामी बापा लगातार आठ दिनों तक हमसे मिले और हमारे बीच सुलह कर ली। दूसरे कामों को ताक पर रखकर स्वामी बापा हमारे साथ बैठते...।''

ऐसे कई परिवार हैं जो स्वामीजी के प्रताप से टूटने से बच गए हैं। ऐसे परिवार के लिए स्वामीजी लगातार तीन दिन तक

दोनों सगे-संबंधियों के बीच के मतभेदों को मिटाकर स्वामीजी ने करुणा से उनके हाथ थामे...

लगातार तीन घंटे बैठते थे! भाइयों में से एक ने कहा, 'यदि स्वामीजी हमारे परिवार की समस्याओं में शामिल नहीं होते, तो हम में से एक मौत के घाट उतर गया होता।'

ऐसी कई घटनाएँ हैं जो शृंखला बनकर हमारे सामने उभडती हैं। स्वामीजी की ऐसी नि:स्वार्थ करुणा को याद कर आज उन परिवारों की आंखें भर आती हैं।

यदि कोई गरीब भक्त छोटी या बड़ी बीमारी से पीड़ित है और अस्पताल का खर्च उठाने में असमर्थ है, तो स्वामीजी उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाएंगे ही।

1996 में ठिकरिया गांव के छगनभाई हरिजन को वडोदरा के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उसके पैरों में खून नहीं पहुंच रहा था, इसलिए दोनों पैर काले पड़ गए। अस्पताल में कार्यरत डॉ. हर्षद जोशी ने छगनभाई की जांच की और निदान किया कि दोनों पैरों को तुरंत काटना होगा। छगनभाई इतने गरीब थे कि उनके लिए ऑपरेशन का भुगतान करना असंभव था।

छगनभाई का दीदार : फटे कपड़े, जीर्ण-शीर्ण छोटी थैली, घर में भी तीन तार से बांधी गई टूटी हुई मिट्टी की ताई, खाने में रोटी और मिर्च। सब्जियों के लिए पैसा कहां? सब्जियां खानी हैं तो रास्ते से छोटे-छोटे पत्थर बटोर, उसे धोकर, आटे में मिलाकर बघारते और उन पत्थरों को रोटी से चूसकर खाते थे। इतनी गरीबी!

प्रमुखस्वामी महाराज को छगनभाई की दयनीय स्थिति के बारे में पता चला और उन्हें खबर मिली कि छगनभाई के पैर काटने पड़ेंगे। स्वामीजी द्रवित हो गए। स्वामीजी ने छगनभाई के ऑपरेशन सहित सभी व्यवस्थाएं नि:शुल्क कीं। हर्षदभाई ने रोग की गंभीरता को बताया। तब स्वामीजी ने उत्सुकता से पूछा, 'इसका क्या कारण है?' चूंकि डॉ. हर्षद छगनभाई से परिचित नहीं थे, इसलिए वह बोले, 'स्वामीजी, अगर वह शराब पीता है और तंबाकू खाता है तो ऐसा ही होता है।'

स्वामीजी ने गुस्से से कहा, 'क्या आप जानते हैं कि वह कौन हैं? वह ऐसा कभी नहीं करते। वह बहुत बड़े हरिभक्त हैं।'

डॉ. हर्षद सोचते रहे कि उसके गंदे कपड़े और दीदार को देखकर नहीं लगता कि वह कोई बड़ा हरिभक्त है! लेकिन स्वामीजी की दृष्टि कुछ भिन्न थी। तब स्वामीजी ने डॉ. हर्षद से कहा, 'वह बहुत बड़े हरिभक्त हैं। आप इनके पांव छूकर उनके पास बैठो और उनकी बात सुनो। बता दें कि स्वामीजी ने मुझे आपके मुंह से बात सुनने के लिए कहा है।'

फिर स्वामीजी ने पूछा, 'आपने उसके खाने के लिए क्या व्यवस्था की है?'

डॉ. हर्षद कहते हैं, 'मंदिर से टिफिन आएगा!'

स्वामीजी बोले, 'मंदिर से टिफिन आने में कभी देर हो सकती है या कभी ना भी पहुंच पाए।' स्वामीजी जानते थे कि अस्पताल के बगल में डॉ. हर्षद का घर है। तो स्वामीजी ने उन्हें छगनभाई के लिए नाश्ता, दोपहर का भोजन, चार बजे चाय और पानी, रात का भोजन सब उनके घर से मंगवाने हेतु आदेश दिया। प्रमुखस्वामी महाराज भी जानते थे कि एक गरीब हरिभक्त क्या खाता है! यह जानकर डॉ. हर्षद चौंक गया।

स्वामीजी के आदेश के अनुसार, वे अस्पताल जाकर छगनभाई के चरणों को छूने लगे, तब छगन भाई ने कहा, 'मुझे मत छुओ। तुम ब्राह्मण हो, हम हरिजन!'

डॉ. हर्षद कहते हैं, 'प्रमुखस्वामी महाराज ने मुझे आपके चरण स्पर्श करने की आज्ञा दी है! मुझे भी आपके प्रवचन सुनने को कहा गया है।'

तब डॉ. छगनभाई ने उच्च आध्यात्मिक कथावार्ता सुनाई। हर्षद चकित रह गये। उन्हें लगा कि छगनभाई के पास स्वयं कुछ नहीं है!

दरअसल, भगवान और संत केवल भक्ति देखते हैं। उनके मन में शिक्षित-अशिक्षित, गरीब-अमीर, ऊँच-नीच आदि भेदभाव नहीं है। इसलिए प्रमुख स्वामी महाराज ने स्वयं ऐसे गरीब हरिभक्तों की देखभाल की है और उन्हें दूसरों के पास

देखभाल करवाई है।

यह भी आश्चर्य की बात है कि स्वामीजी कैसी-कैसी परिस्थिति में हरिभक्तों की चिंता करते थे। 1999 में प्रमुखस्वामी महाराज की जयंती तीथल में भव्य रूप से मनाई जा रही थी। इस विशाल जयंती सभा में लगभग 1,40,000 हरिभक्त उपस्थित थे। सभा में जब संत और भक्त स्वामीजी को प्रणाम कर रहे थे, तब जामनगर में सेवा कर रहे पूज्य धर्मनिधिदास स्वामी, स्वामीजी को माला चढ़ाने आए। उन्हें देखकर स्वामीजी ने जामनगर के एक हरिभक्त के पत्र के बारे में विवरण मांगना शुरू कर दिया।

बात कुछ ऐसी थी कि जामनगर के सन्निष्ठ हरिभक्त डॉ. श्री सतोदिया कम उम्र में चल बसे थे। जब पति की मृत्यु हो गई तो घर की सारी जिम्मेदारी पत्नी पर आ गई। उनके बच्चे अभी छोटे थे। इसके अलावा, कई पारिवारिक और सामाजिक मुद्दों को उठाया गया था। तब उस महिला हरिभक्त ने मदद के लिए स्वामीजी को एक पत्र लिखा था। स्वामीजी जन्मजयंती के भव्य समारोह में उस पत्र के बारे में विशेष जानकारी पूछ रहे थे। स्वामीजी की जय जयजयकार हो रही थी, लाखों लोग उनके सम्मुख बैठे थे, साधु-संत भव्य मंच पर उनका स्तुतिगान कर रहे थे, विभिन्न भव्य कलात्मक पुष्पमालाओं से उन्हें सम्मानित किया जा रहा था, उस समय भी स्वामीजी के मन में एक हरिभक्त के पत्र के बारे में विचार चल रहे थे। धर्मनिधिदास स्वामी सोचते रहे। स्वामीजी एक हरिभक्त की समस्या को हल करने पर विचार कर रहे थे, जबकि भक्त उनका स्वागत करने के लिए उनका इंतजार कर रहे थे। वह कितने दुर्लभ और विरक्ततम महापुरुष हैं!

स्वामीजी की उपकार की यह पवित्र गाथा अमृत के विशाल सागर से ली गई एक बूंद के समान है। आध्यात्मिक गुरु होने के साथ-साथ भक्तों के लिए उनसे राहत, आशीर्वाद और मार्गदर्शन की अपेक्षा करना स्वाभाविक है। हरिभक्तों की इन अपेक्षाओं को पूरा कर उन्हें संतुष्ट करने के लिए स्वामीजी ने जो शारीरिक कष्ट झेले हैं, उसकी कहानी भी हृदयविदारक है।

देवगढबरिया के चार वर्षीय बालक शंभू की मन्नत पूरी करने के लिए उसके घर स्वामीजी ने रात को पधरावनी की है। हीरा भरवाड़ जैसे ग्रामीण भक्त की मरणोपरांत मृत्यु के अवसर पर उसके परिवारजनों को 280 किलो लड्डू बनाकर खिलाया है। दोपहर 2:30 बजे भोजन लेने बैठे हो वह भोजन थाली ठेल कर वह भक्तों को प्रसन्न करने के लिए पधरावनी पर गए हैं। एक ही किसान के कुएँ की खातविधि संपन्न करने के लिए

स्वामीजी ने बेचारे हरिजन भाई को करुणामय हाथ से संभाला...

स्वामीजी मीलों की सफर तय करके पहुंचे हैं। सुनाव के एक बच्चे ने फोटो मंगवाया तो उसे फोटो भेजकर प्रसन्न किया है। मुंबई में एक असहाय गरीब व्यक्ति की बेटी की शादी करने के लिए धनराशि देने वाले स्वामीजी की करुणा गंगा ने कभी किसी को निराश नहीं किया। हरिभक्तों को संतुष्ट करने के लिए, उन्होंने कपड़े की दुकान में कपड़ा नापा है, किराने की दुकान में घी तौला है और यहां तक कि गाय-भैंस या अनाज के खलिहान पर हाथ रख दिया है। रात और दिन, ठंड या धूप की प्रतिकूलता को देखे बिना उन्होंने 17,000 गांवों की यात्रा की है, 250,000 घरों का दौरा किया है, 750,000 से अधिक पत्रों का उत्तर दिया है, लोगों के सवालों को सुना है और उनका मार्गदर्शन किया है।

विवेकसागरदास स्वामी, जिन्होंने स्वामीजी के साथ 42 वर्षों तक विचरण किया था, ने स्वामीजी का परिचय देते हुए एक बार कहा था – 'अपने शरीर की तनिक भी परवाह किए बिना, दिन रात ठंडी गर्मी देखे बिना, गरीब अमीर का भेदभाव रखे बिना, छोटा बड़ा, अपना पराया ऐसा कोई भी भेदभाव रखे बिना, जन जन के हित के लिए निरंतर बहने वाली करुणा गंगा... यानी परम पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज!'

इस परम परोपकारी सार्वभौम संतविभूति के लिए आज कितने लोग गीली आँखों से गाते हैं:

'आज मेरा स्वामीजी ने थामा हाथ...' ◆

प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज के विचरण समाचार

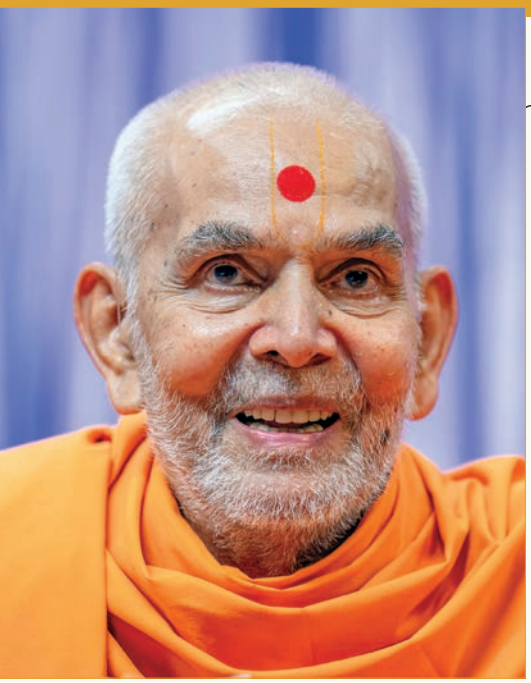

सारंगपुर में सत्संग का लाभ दे रहे स्वामीजी...

सारंगपुर तीर्थधाम संप्रदाय का नैमिषारण्य क्षेत्र है। जहां भक्ति की मधुर घंटियां बजती हैं। ज्ञान के दीप सदैव प्रज्ज्वलित रहते हैं।

इस महातीर्थ में परम पूज्य महंत स्वामीजी महाराज दिव्य सत्संग लाभ दे रहे हैं। स्वामीजी के सानिध्य में वहां नित्य आध्यात्मिकता का दिव्य माहौल खड़ा होता है। इसमें डूबे हुए संत-हरिभक्त-भाविक परब्रह्म का साक्षात्कार कर रहे हैं। स्वामीजी दर्शन वाटिका में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के प्रासादिक स्थान 'प्रमुख मंदिरम्' में प्रथम पूजा दर्शन का लाभ देते हैं, वहीं दूर-दूर से आने वाले हजारों भक्तों को स्वामीजी के दर्शन और आशीर्वाद का लाभ मिलता है। ऑनलाइन सत्संग सभाओं में भी स्वामीजी दर्शन-आशीर्वाद से सभी को कृतार्थ करते हैं। जब पूरी दुनिया में कोरोना का कहर बरपा है, तब स्वामीजी इस घातक रोग से सभी की रक्षा और सभी की भलाई के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। आइए, पिछले दो महीनों के दौरान स्वामीजी द्वारा बी.ए.पी.एस. के विभिन्न मंदिरों में दी गई मूर्तियों के साथ-साथ अन्य अवसरों पर दी गई स्मृतियों का आनंद लें...!

4-8-2021 को, स्वामीजी ने अहमदाबाद में साबरकांठा में अमीनपुर और बहेड़िया में निर्मित बी.ए.पी.एस. मंदिर का उद्घाटन किया, मंदिर में स्थापित होने वाली मूर्तियों की वेदोक्त प्राण-प्रतिष्ठाविधि की। साथ ही उन्होंने भद्रेसर गांव के मुख्य द्वार की खात-शिलाओं की भी पूजा की।

13-8-2021 तिथि के अनुसार आज ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का पांचवां अंतर्धान दिन था। स्वामीजी ने प्रमुखस्वामी महाराज के स्मारक का दौरा किया और आरती करके उन्होंने शास्त्रीजी महाराज के सांनिध्य में विभिन्न शुभ संकल्पों की पूर्ति के लिए प्रार्थना की।

19-8-2021 को, स्वामीजी ने सारंगपुर में बी.ए.पी.एस., दक्षिण लंदन के मंदिर में प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों की एवं पूर्वी लंदन के मंदिर में नीलकंठवर्णी महाराज की प्रतिमा की वेदोक्त विधि द्वारा औपचारिक रूप से प्राण-प्रतिष्ठा की।

24-8-2021 को सारंगपुर में स्वामीजी ने केनेडा के विभिन्न शहरों वेंकूवर, एडमिंटन, कैल्गेरी, व्हिटबी, सास्काटून, विनिपेग एवं भारत में गुजरात के पाटडी, वसई, पीपलक, हीराचंद मुवाडी आदि के बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिरों में प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा, पूजन, आरती आदि किया।

26-8-2021 को स्वामीजी ने दक्षिण गुजरात के महानगर के कणाद में नवनिर्मित शिखरबंध बी.ए.पी.एस. मंदिर के परिसर में, ठाकोरजी और संतनिवास 'प्रमुख हृदय' की खातशिलाओं और मशीनों की वेदोक्त विधि द्वारा औपचारिक पूजा की।

27-8-2021 को स्वामीजी ने सुरेंद्रनगर में निर्माणाधीन बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर के परिसर में संत आश्रम, सभागार आदि में प्रयुक्त पत्थर एवं यंत्रों की विधिपूर्वक पूजा की और अनुष्ठान किया।

गुजरात में कच्छ क्षेत्र भगवान स्वामिनारायण के पदारविंद द्वारा कई बार पवित्र की गई भूमि है। इस भूमि के महानगर भुज में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के आशीर्वाद और प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से, एक नया शिखरबद्ध BAPS मंदिर जल्द ही स्थापित किया जाएगा। इस निर्माणाधीन मंदिर के प्रथम चरण के रूप में 4-9-2021 को परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने संतआश्रम, सभागार आदि विभिन्न परियोजनाओं का विधिवत खातपूजन किया एवं स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया।

10-9-2021 को गणेश चतुर्थी के शुभ दिन पर स्वामीजी ने वेदोक्त अनुष्ठान के साथ गणपतिजी की मूर्ति की पूजा की और लड्डू का भोग लगाकर आरती अर्घ्य अर्पित किया। सारंगपुर में इस प्रवास के दौरान स्वामीजी ने विभिन्न उत्सव मनाए और दिव्य स्मृतियाँ प्रदान कीं। आइए, संक्षेप में उन त्योहारों का आनंद लें...

जन्माष्टमी त्योहार

30-8-2021, सनातन हिंदू धर्म में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का एक और महत्व है। उनके प्रकट होने के दिन, परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की दिव्य उपस्थिति में जयंती मनाई गई। प्रात:पूजा के बाद भक्तिसागरदास स्वामी, विवेकसागरदास स्वामी भगवान श्री कृष्ण के बारे में उनके अवतार कार्य को उजागर किया। पूज्य डॉ. स्वामी ने भी प्रेरणा वचन कहे। इस अवसर पर अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के समक्ष विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ एवं फल बनाए गए। उत्सवीय भक्ति के कीर्तनों के गान के साथ, स्वामीजी ने कलात्मक पालने में ठाकोरजी को झुलाकर विशेष भक्ति की।

भगवान कृष्ण जन्मोत्सव की मुख्य सभा ऑनलाइन मनाई गई। रात 8 से 9-30 बजे तक प्रसारित होने वाली महोत्सव सभा में भगवान कृष्ण के दिव्य चरित्रों का महिमामंडन किया गया। श्रुतिप्रकाशदास स्वामी और भक्तिसागरदास स्वामी ने श्रवण मास परायण के तहत कथावार्ता का लाभ प्रदान करते हुए क्रमश: महाभारत और श्रीमद्भागवत में वर्णित भगवान कृष्ण के दिव्य चरित्रों और संदेश का महिमामंडन किया। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने भगवान कृष्ण के दिव्य पात्रों की महिमा गाई थी उस स्मृति को वीडियो के माध्यम से साझा किया।

फूलहार स्वीकारविधि के बाद, स्वामीजी ने आज के त्योहार के अनुरूप आशीर्वाद दिया और कहा: 'जन्माष्टमी का उत्सव पूरे भारत में मनाया जाता है। वैष्णवों में विशेष रूप से मनाया जाता है।' उस अवसर का वर्णन किया, जब महाभारत के युद्ध से पहले कौरव और पांडव भगवान कृष्ण के पास गए थे। फिर स्वामीजी ने कहा, जहां भगवान और संत हैं, वहां विजय है। युद्ध में अर्जुन ने भगवान के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, तो वह जीत गया।

श्रीजी महाराज ने भी कहा, 'कोई अनंत साधना करता है और कोई एक साधना करता है...' - एक साधन क्या? तो भगवान की दृढ़ शरण का स्वीकार करना। हमें भगवान का दृढ़ आश्रय है। हम अक्षरपुरुषोत्तम के योद्धा हैं। हमने अपनी आशा को त्याग कर भगवान के सामने समर्पण कर दिया है, इसलिए हमारी जीत निश्चित है। हम शास्त्री जी महाराज, योगीजी महाराज और प्रमुखस्वामी महाराज से मिले हैं। ये सत्पुरुष माया के पार हैं। हमने उनकी शरण ली है इसलिए वह सीधे अक्षरधाम हमें ले जाएंगे।

अब प्रमुखस्वामी महाराज का शताब्दी महोत्सव आ रहा है, तो हमें अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा सुदृढ करना होगा और नियमों का पालन करते हुए निष्ठा का प्रवर्तन करने में जूट जाएं। आइए जितना हो सके गुरुभक्ति को प्रदर्शित करें वही प्रार्थना।'

आशीर्वाद पूरा होने के बाद, स्वामीजी ने एक कलात्मक पालने में विराजमान अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की आरती उतारी। फिर संकीर्तन भक्ति के माध्यम से भगवान का प्रकटीकरण उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। अंत में स्वामीजी ने भगवान को पालने में झुलाकर भक्ति अर्पित की।

कृष्णजन्मोत्सव की विशेष सभा जीटीपी चैनल में प्रसारित की गई थी, जिसका लाभ देश विदेश स्थित लाखों भक्तों ने लिया।

गुरुहरि जन्मजयंती दिन

13-9-2021, आज अंग्रेजी तारीख अनुसार परम पूज्य महंत स्वामी महाराज का 88वां जन्मदिन भक्ति के साथ मनाया गया। उत्सव के अनुरूप सजावट की गई थी। गुरुहरि को जन्मदिन की बधाई देने के लिए दूर-दूर से एकत्रित हुए हरिभक्तों को स्वामीजी ने प्रथम पूजा दर्शन का लाभ दिया। पूजा के दौरान, स्वामीजी के विभिन्न अवसरों का स्मरण करते हुए संगीतकार संतों ने भजन गाए और संतत्व का वर्णन किया। भक्तिमय कीर्तन गान से वातावरण विशेष रूप से उत्सवमय हो गया।

पूजा के अंत में, स्वामीजी ने अपने आशीर्वाद में श्रीजी महाराज और गुणातीत गुरुओं की महिमा गाई, और फिर कहा, 'आप सभी तन मन और धन से सुखी हों, सभी के व्यवहार में सुधार हो, कोरोना महामारी में जो घाटा हुआ है वह भरपाई हो जाए और समग्र देश में 20 आनी बारिश बरसे यह आशीर्वाद है।'

आज देश-विदेश से हरिभक्तों ने गुरुहरि के जन्मदिन पर विभिन्न कलात्मक मालाएं और चादरें भेजी थीं। बी.ए.पी.एस. परिवार की ओर से पूज्य डॉ. स्वामी और आत्मास्वरूपदास स्वामी ने स्वामीजी को भेंट चढ़ाकर बधाई दी।

मंडपम् पूजन - उद्घाटन

16-9-2021 को सारंगपुर में विशेष अवसर मनाया गया। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के स्मारक के पास एक कलात्मक मंडप का निर्माण किया गया है। इसका नाम है - 'प्रमुख दर्शन-पूजन मंडपम्।'

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के करकमल द्वारा आज इस मंडपम् का औपचारिक उद्घाटन किया गया।

उद्घाटन समारोह के बाद, स्वामीजी ने औपचारिक रूप से मंडपम् में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज और ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की मूर्तियों को कलात्मक सिंहासन में स्थापित किया! उसी समय कलश में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के अस्थि पुष्प रखे गए हैं। इसके अलावा, भगवान स्वामिनारायण के पुनीत चरणारविंद स्थापित करके स्वामीजी ने आरती-अर्घ्य और मंत्रपुष्पांजलि अर्पित की।

सारंगपुर में दर्शन की प्रतीक्षा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु इस मंडपम् में दर्शन का लाभ प्राप्त कर धन्य महसूस करेंगे।

जलयात्रा उत्सव

17-9-2021, भादों सुद एकादशी जलजिलानी-परिवर्तिनी एकादशी का सबसे पवित्र दिन है। यह दिन BAPS द्वारा वर्षों से मनाया जाता रहा है। ठाकुरजी की सवारी जल में निकाली जाती है। भक्ति के साथ मनाई जाती इसी परंपरा में, जलयात्रा उत्सव परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति में सारंगपुर में मनाया गया। मंदिर में सुबह से ही उत्सव का माहौल बना हुआ था। हरिभक्त-भाविक सब भक्ति में गुलतान बन गए थे। सबका जोश निराला था। प्रमुख दर्शन वाटिका हरिभक्तों से लबालब भरी हुई थी। स्वामीजी ने प्रासादिक 'प्रमुख मंदिरम्' से पूजा दर्शन का लाभ दिया। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज भी एक कलात्मक नाव में विराजित होकर दर्शनलाभ दे रहे थे।

जलयात्रा उत्सव की शुरुआत सुबह की पूजा के साथ हुई। संतों की सुरीली आवाज में भगवान स्वामिनारायण के जलविहार के कीर्तन गान से पूरा माहौल उत्सवमय हो गया।

पूजा के बाद, स्वामीजी ने परिवर्तिनी एकादशी का अर्थ समझाते हुए जीवन परिवर्तन विषयक आशीर्वाद दिया: 'यह त्योहार अनादि काल से चला आ रहा है। यह एक ऐसा उत्सव है जो हम सभी के जीवन को बदल देता है। जीवन का परिवर्तन हो यही मुद्दा है बाकी तो जलाशय बनाना इत्यादि दृश्य खड़ा करना यह तो सब चलता रहेगा, लेकिन बात यह है कि जीवन को बदलना है।

आज भगवान ने करवट बदली है। यानी कि हमारे जीवन की रीतभात को बदलने की बात है। और हम सब सत्संगी तो बन गए हैं लेकिन आज और अभी सब कुछ नहीं बदलता, धीरे-धीरे बदलाव आता है। चलते रहो। एक जगह नहीं रुकना है। गिरते, पटकते उठकर चलना है, निशाने-अक्षरधाम पहुँचना है। और विश्वास रखें हम अवश्य पहुंचेंगे ही। गीता में कहा है, 'श्रद्धावान्' लभते ज्ञानम्' श्रद्धा है तो ज्ञान होता है। हम श्रद्धा और विश्वास से आगे बढ़ते रहें यही भगवान से प्रार्थना करते हैं।'

आशीर्वाद पूरा होने के बाद, पूज्य डॉक्टर स्वामी ने परम पूज्य स्वामीजी को पुष्प माला अर्पण की।

अंत में ठाकोरजी की जललीला शुरू हुई। शुद्ध पानी से भरे होज में, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज नाव में बैठकर जलविहार करने के लिए चले। रिमोट कंट्रोल द्वारा स्वामीजी नाव को संचालित कर रहे थे। परंपरा के अनुसार, वरिष्ठ संतों ने ठाकोरजी की चार आरती की और पांचवीं आरती स्वामीजी द्वारा की गई।

ठाकोरजी की जललीला के बाद स्वामीजी ने गणपतिजी की वैदिक उपचार से पूजा की। उत्सव के समापन के बाद संतों ने 'गणपति बापा मोरिया' के नारों के बीच यज्ञपुरुष सरोवर में गणपति की मूर्ति को विसर्जित किया। इस प्रकार आज के पर्व का समापन भक्ति भाव से हुआ।

सुबह 6-15 से 8-15 बजे तक live.baps.org एवं GTPL कथा चैनल पर प्रसारित जलजीलानी उत्सव के लाभ से हजारों हरिभक्त मंत्रमुग्ध हो गए।

सारंगपुर मंदिर में आज सरकार द्वारा कोरोना वैक्सीन देने की योजना बनाई गई थी। इसमें कई श्रद्धालुओं ने टीकाकरण का लाभ उठाया। ◆

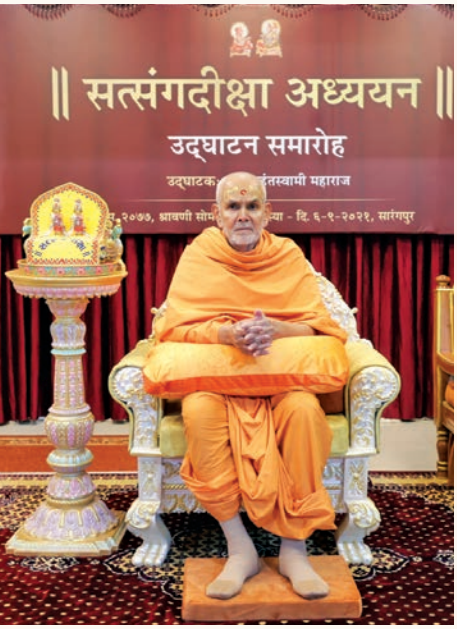

सत्संगदीक्षा अध्ययन ऑनलाइन पाठ्यक्रम

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने औपचारिक रूप से किया उद्घाटन...

परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण और ब्रह्मस्वरूप गुरुपरम्परा के दिव्य सिद्धांतों का सारांश, महंत स्वामी महाराज द्वारा गुजराती में लिखित सत्संगदीक्षा शास्त्र आज कई भाषाओं में उपलब्ध है। इसके गहन अध्ययन और समझ के लिए बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण शोध संस्थान दिल्ली, द्वारा ऑनलाइन कक्षाएं शुरू की गई हैं।

यह ग्रंथ परब्रह्म भगवान स्वामिनारायण द्वारा उपदेशित आज्ञा और उपासना के सिद्धांतों का संक्षेप में वर्णन करता है और मुक्ति का मार्ग दिखाता है। यह ग्रंथ अक्षरपुरुषोत्तम संहिता नामक ग्रंथ के एक भाग में समाहित है। जो शास्त्रीय शैली के माध्यम से सत्संग के नैतिकता, दर्शन और सिद्धांतों के विभिन्न आयामों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इस ग्रंथ की रचना संस्कृत में महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी ने की है। सत्संगदीक्षा शास्त्र के 315 श्लोकों में वैदिक सनातन धर्म का सार, सकल शास्त्रों का सार और भक्ति परंपरा शामिल है। यह समग्र ग्रंथ सामाजिक समरसता का पोषण करता है। सत्संग दीक्षा में उल्लिखित नैतिक आचरण, सामाजिक अभ्यास और आध्यात्मिकता के गहन विषयों को सहज रूप से समझने के लिए ऑनलाइन कक्षाएं शुरू की गई हैं। जो छात्र भाग लेना चाहते थे और कम से कम 18 वर्ष के थे, वे आवेदन के माध्यम से ऑनलाइन पंजीकृत थे। जिसमें छात्रों ने अपनी मनपसंद भाषा में कोर्स का रजिस्ट्रेशन कराया। ऑनलाइन कक्षाएं छात्र द्वारा चुनी गई भाषा में ही पढ़ाई जाएंगी।

6-9-2021 को इस सत्संग दीक्षा अध्ययन का उद्घाटन समारोह सारंगपुर में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज, पूज्य डॉक्टर स्वामी और पूज्य विवेकसागरदास स्वामी की उपस्थिति में हुआ। शाम को आयोजित उद्घाटन समारोह में, पूज्य विवेकसागरदास स्वामी ने स्वामिनारायणीय वांग्मय साहित्य सर्जन के बारे में बात की और शास्त्र की महानता का वर्णन किया। उसके बाद परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने दीप प्रज्ज्वलित किया। प्रथम अक्षरपुरुषोत्तम महाराज और साथ ही 'सत्संगदीक्षा' की पूजा करके अध्ययन शुरू किया। इस अवसर पर महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी ने समसामयिक संबोधन में पृष्ठभूमि सहित अध्ययन की विस्तृत जानकारी दी।

सत्संगदीक्षा शास्त्र की महिमा बताते हुए स्वामीजी ने कहा: 'भगवान स्वामिनारायण द्वारा अक्षरपुरुषोत्तम की बात प्रचलित हुई। उन्होंने यह बात कितनों को रूबरू की है। गुणातीत गुरुओं ने भी यह बात की है। उनके मन में बहुत स्पष्ट था कि महाराज और स्वामी - ये दो स्वरूप हैं। लेकिन वह समय नहीं आया, अब तो समय आ गया है।

आज्ञा और उपासना दो मुख्य बात है। यह सब इस ग्रंथ में संक्षिप्त में हमारे हाथ में आ गया है। इसलिए जो महाराज-स्वामी और गुरुपरम्परा के मन में था वही सत्संग दीक्षा में लिखा गया है। अब सबको पढ़ना है। वर्ष के अंत में शुद्ध उच्चारण के साथ अध्ययन करेंगे और सार को जानेंगे, हृदयगत अभिप्राय को भी जानेंगे। यह जानने के बाद जीवन में उसे चरितार्थ करना है। और यह सत्पुरुष के सिवा और कोई नहीं करवा सकता है। वे महाराज-स्वामी के अधीन हैं। उन्हें मानकर सभी कार्य करते हैं। यह सब सत्संग दीक्षा में लिखा है। इसका अध्ययन अवश्य करें।'

इस प्रकार स्वामीजी की निश्रा में सायं 6-30 से 8-00 बजे तक सत्संगदीक्षा शास्त्र अध्ययन की प्रथम कक्षा ली गई। ऑनलाइन प्रसारित इस प्रथम श्रेणी में देश-विदेश के संतों के साथ-साथ कई हरिभक्त भी शामिल हुए और गुरुहरि की प्रसन्नता प्राप्त की। पूर्वायोजित ऑनलाइन पंजीकरण के अनुसार, 15,000 युवाओं और हरिभक्तों पुरुष-महिलाएँ जुडे हैं। ये कक्षाएं एक वर्ष की निश्चित अवधि के लिए ऑनलाइन उपलब्ध होंगी।

(ब्रह्मवत्सलदास स्वामी द्वारा लिखित रिपोर्टों से संकलित) ◆

शिकागो, यू.एस.ए. में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर में युवा गतिविधि केंद्र का उद्घाटन...

अमेरिका में मिशिगन झील के तट पर स्थित, विश्व प्रसिद्ध शहर शिकागो का भारतीय संस्कृति के इतिहास में एक अनूठा पृष्ठ है। आज से डेढ़ सदी पहले जब स्वामी विवेकानंद ने यहां भारतीय संस्कृति की घोषणा की थी, तब उन्होंने संस्कृति की मशाल जलाई थी और उम्मीद जताई थी कि भविष्य में भारत से युवा यहां विचरण करने आएंगे।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने शिकागो शहर में वर्ष २००४ में जब भारतीय संस्कृति की विरासत समान बीएपीएस शिखरबंद मंदिर को उपहार में दिया, तो कई लोगों को लगा कि स्वामी विवेकानंदजी के शब्द सच हो रहे हैं।

प्रमुखस्वामी महाराज ने सनातन वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति के पोषण के लिए मंदिर के साथ-साथ यहां सत्संग गतिविधियों की अनूठी ज्योति जलाई है। इसके लिए, उन्होंने अमेरिका में भारतीय पारंपरिक शैली में एक विशाल सत्संग भवन और पहली लकड़ी की कलात्मक हवेली का निर्माण किया। पिछले १७ वर्षों से यह मंदिर यहां रहने वाले भारतीयों के बीच सनातन हिंदू संस्कृति और संस्कारों की ज्योत को प्रज्वलित रखते हुए, भौतिकवाद के भँवर से युवा पीढ़ी को उबारकर सत्संग के मार्ग पर ले जा रहा है।

आज हजारों भक्त और साथ ही अमेरिकी मूल-निवासी नई आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त करने के लिए स्वामिनारायण मंदिर में आया करते हैं। यहां प्रतिवर्ष किशोर शिविर, युवा शिविर, युवा सम्मेलन, युवा सेमिनार, राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किए जाते हैं और इसके द्वारा युवाओं की विभिन्न रचनात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने का प्रयास होता है।

हाल ही में मंदिर परिसर में एक नया सोपान जुड़ गया है। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के संकल्प के अनुसार, प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज के आशीर्वाद से, २९-८-२०२१ को पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी द्वारा युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए युवा गतिविधि केंद्र का उद्घाटन किया गया। इसके उपलक्ष्य में सुबह मंदिर के विशाल प्रांगण में पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी, यज्ञवल्लभदास स्वामी और संतों की उपस्थिति में वेदोक्त महापूजा समारोह भी आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में ग्रेटर शिकागो और मिडवेस्ट से बड़ी संख्या में हरिभक्त शामिल हुए थे। पवित्र वेदमंत्रों के उच्चारण से पूरा मंदिर परिसर अलौकिक आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया था। महापूजा के अंत में पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की दूरदर्शिता और विशाल दृष्टिकोण का वर्णन करते हुए कहा, 'इस युवा गतिविधि केंद्र के माध्यम से हजारों युवा सकारात्मकता की ओर बढ़ेंगे। वहीं प्रमुख स्वामी महाराज के संकल्प के अनुरूप चरित्रवान समाज बनाने की यहां से

विशेष प्रेरणा प्राप्त करेंगे।'

यूथ एक्टिविटी सेंटर में कुल २६ कमरे, बैठक कक्ष और एक पूर्ण जिम स्थापित किया गया है, जिससे बच्चे और युवा आसानी से संस्कृति, धर्म, कला, संगीत, स्वास्थ्य और अन्य जीवन वर्धक गतिविधियों में शामिल हो सकेंगे। वहीं, यहां एक प्रदर्शनी कक्ष और नीलकंठ वर्णी अभिषेक मंडपम् भी बनाया गया है। इस युवा गतिविधि केंद्र के उद्घाटन के साथ, युवाओं के जीवन की बेहतरी के लिए नई दिशाएँ खुल गई हैं। ◆

(पृष्ठ 14 का शेषांश)

दूसरे शब्दों में, वृक्ष अपने को काटने वाले को भी छाया देता है। नीतिशतक में कथित तौर पर यह भावना न केवल स्वामीजी की परोपकारी शिक्षाओं में, बल्कि जीवन में भी प्रतिध्वनित हुई थी। यह परोपकार की पराकाष्ठा है। इस ऊंचाई पर भारत के कई ऐसे करुणामय संत विराजमान हैं, जिससे भारत का गौरव उमड़ रहा है।

जी हाँ, इस तरह उन्होंने संसार के दुखों का समुद्र मंथन कर समाज को सुख के रत्न दिए हैं और स्वयं शिव ने सहज ही हमारे विष को आत्मसात् कर लिया है! ऐसे संतरूपी चंदन जो खुद को रगड़कर दूसरों को खुशबू देते हैं, यह हमारी सभ्यता का शिलालेख है। जैसे धूप और दीपक स्वयं जलकर प्रकाश देते हैं, फूल जब तक जगत को सुगंध देता है, उसी प्रकार फलदार वृक्ष भी पत्थर फेंकने वाले को फल और छाया देता है। लेकिन प्रमुख स्वामी महाराज जैसे संत, जो बिना कुछ लिए उदारता से दया की सुगंध फैलाते हैं, संतत्व के शिखर हैं। उनकी तरह महकने वाला एक दिन का जीवन एक लाख नकली दिनों से अधिक है।

स्वामीजी की इस भावना को समझने और लिखने के लिए लेखनी बौनी साबित होती है। जिस प्रकार मनुष्य की बुद्धि की एक सीमा होती है, उसी प्रकार शब्दों की भी एक सीमा होती है। यह एक तथ्य है कि भाषण का विश्वकोश भी प्रमुखस्वामी महाराज के महान व्यक्तित्व का एक सीमित ग्राफ ही प्रस्तुत कर सकता है। ◆

अटलांटा में बी.ए.पी.एस. मंदिर में अभिषेक मंडप का उद्घाटन

संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण-पूर्वी भाग में जॉर्जिया राज्य की राजधानी अटलांटा में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के कर कमलों से 26-8-2007 को भव्य स्वामिनारायण मंदिर प्रतिष्ठित हुआ था। पारंपरिक भारतीय शैली में संगमरमर से निर्मित, यह मंदिर पिछले 14 वर्षों से भारतीय संस्कृति का सबको परिचय दे रहा है और अटलांटा के शहरवासियों के बीच एक अनूठा आकर्षण बन गया है।

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने वर्ष 2017 में यहां अभिषेक मंडपम् का उद्घाटन किया था। हाल ही में इस अभिषेक मंडपम् का नवीनीकरण किया गया है। 1 सितंबर, 2021 को इस कलात्मक, सुंदर अभिषेक मंडपम् का उद्घाटन पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने किया। फिर अभिषेक करके उन्होंने यहां आने वाले सभी लोगों के शुभ संकल्पों की पूर्ति के लिए प्रार्थना की। ◆

ऑस्ट्रेलिया के पर्थ क्षेत्र के होबार्ट शहर में मंदिर और श्री नीलकंठवर्णी महाराज की मूर्ति स्थापना

प्रमुखस्वामी महाराज के आशीर्वाद से, परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के प्रावधान में एशिया-प्रशांत देशों में BAPS मंदिर की स्थापना हो रही है। परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने ता. 28-7-2021 को वेदोक्त विधि द्वारा प्राण प्रतिष्ठा पूजन की गई। मूर्तियों को होबार्ट शहर में पूज्य परमचिन्तनदास स्वामी और अन्य संतों द्वारा स्थापित किया गया था। इस उत्सव में 1,330 से अधिक स्थानीय शहर के भक्तों ने भाग लिया। पर्थ शहर के वांगरा क्षेत्र में 15-8-2021 को नए बी.ए.पी.एस. मंदिर में श्री नीलकंठवर्णी महाराज की मूर्ति की स्थापना भी संतों के हाथों से संपन्न हुई। ◆

कनाडा के चार महानगरीय क्षेत्रों में चार नए बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर में मनाया गया प्राणप्रतिष्ठा उत्सव

परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज के अथक प्रयासों के कारण BAPS स्वामिनारायण संस्था की गतिविधियां पूरे कनाडा में फैल गई हैं। हाल ही में कनाडा के चार शहरों में सत्संग की दिन-प्रतिदिन वृद्धि के परिणामस्वरूप नये बी.ए.पी.एस. मंदिरों के प्रतिष्ठा उत्सव परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की आज्ञा से परम पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी द्वारा संपन्न हुए। इसका एक संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है।

1) महानगर वैंकूवर में प्रतिष्ठा समारोह

11 सितंबर, 2021 को एक नये बी.ए.पी.एस. मंदिर में मूर्तियों की स्थापना का कार्यक्रम हुआ।

बर्फ से ढके पहाड़, प्रशांत महासागर, वर्षावन और खूबसूरत वनस्थली वैंकूवर दुनिया के सबसे अच्छे शहरों में से एक है। वर्ष 1988 में परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज का विचरण यहीं हुआ था और उससे पूर्व वर्ष 1986 में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज, पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी एवं संतमंडल भी सत्संग विचरण के लिए यहाँ पधारे थे। इसलिए इस शहर को BAPS स्वामिनारायण सत्संग का एक सहज संयोग प्राप्त हुआ कहा जाता है। यहां समय-समय पर वरिष्ठ संत और अन्य संत आते रहते थे। टोरंटो में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर के संतों ने भी समय-समय पर सत्संग का लाभ देने के लिए यहां विचरण किया। नतीजतन, एक नया बी.ए.पी.एस. मंदिर निर्माण हो गया।

यहां बने इस बी.ए.पी.एस. मंदिर में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज द्वारा 9-7-2021 को पूजा की गई मूर्तियों का वेदोक्त स्थापना समारोह पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी के हाथों संपन्न हुआ।

मंदिर में कनाडा के प्रमुख श्रद्धालु शामिल हुए और अन्य भक्तों ने कोरोना महामारी के चलते ऑनलाइन माध्यम से मूर्तियों की स्थापना का आनंद उठाया। पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने सभी को मंदिर की महिमा के बारे में बताया और उनसे विशेष लाभ लेने का अनुरोध किया।

2) महानगर एडमॉन्टन में प्राणप्रतिष्ठा

एडमॉन्टन स्थित नये बी.ए.पी.एस. मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा संपन्न हुई। एडमॉन्टन शहर कनाडा के अल्बर्टा राज्य की राजधानी है। सर्दी के मौसम में यह शहर 'विंटर वंडरलैंड'

बन जाता है। ऐसे महानगर में परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज और महंत स्वामी महाराज के आशीर्वाद से नूतन निर्माण हुए बी.ए.पी.एस. मंदिर में 12 सितंबर 2021 को मूर्तियों की स्थापना का समारोह आयोजित किया गया था।

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज द्वारा 24-8-2021 को पूजित मूर्तियों का स्थापना समारोह पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी के हाथों संपन्न हुआ।

सभा को संबोधित करते हुए, पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने कहा कि मंदिर होने से कई परिवारों को सांस्कृतिक, आध्यात्मिक प्रेरणा के साथ-साथ सच्ची आज्ञा और उपासना भक्ति मिलती है। इस मंदिर का असली उद्देश्य तभी है जब हम इसका नियमित रूप से लाभ उठाएं।

3) महानगर सास्काटून में मूर्ति प्रतिष्ठा

18 सितंबर, 2021 को नवनिर्मित बी.ए.पी.एस. मंदिर सास्काटून में प्रतिष्ठा उत्सव का संपन्न हो गया।

सास्काटून कनाडा के सास्काचेवान प्रांत का एक महानगर है। इसे 'कनाडा सनिएस्ट प्रोविन्स' भी कहा जाता है। बहुत ही जीवंत वातावरण अपने मैत्रीपूर्ण आतिथ्य और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए भी प्रसिद्ध है।

शहर में नवनिर्मित बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के हाथों 9-7-2021 को पूजी गई मूर्तियों की स्थापना पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी द्वारा आयोजित हुई। विशेष योगदान देने वाले भक्तों ने मंदिर एवं अन्य भक्तों ने इस वेदोक्त स्थापना समारोह के कार्यक्रम का ऑनलाइन माध्यम से आनंद उठाया। अंत में पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने सभी की सेवाओं की सराहना की। उन्होंने सभी से मंदिर का विशेष लाभ लेने को भी कहा।

4) महानगरी विनीपेग में प्रतिष्ठा समारोह

विनीपेग को 2016 में नेशनल ज्योग्राफिक चैनल द्वारा देखे जाने वाले 20 स्थानों में से एक के रूप में शामिल किया गया था। इस महानगर में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज और परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के आशीर्वाद से बने नए मंदिर में ता. प्रतिमाओं की स्थापना 19 सितंबर को हुई।

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज द्वारा 9-7-2021 को प्राणप्रतिष्ठित की गई मूर्तियों की स्थापना पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने की थी। इस अनुष्ठान में विशेष योगदान देने वाले भक्तों को मंदिर एवं घर बैठे अन्य भक्तों के माध्यम से ऑनलाइन लाभ हुआ। अंत में सभी भक्तों की सेवा और भक्ति की प्रशंसा करते हुए पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने मंदिर की महिमा के बारे में बताया।

इस प्रकार, टोरंटो में भव्य शिखर मंदिर के निर्माण के बाद कनाडा में सत्संग विकास दिवस दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। इसके साथ ही कनाडा के चार महानगरों में नए मंदिरों के प्रतिष्ठा समारोह संपन्न हुए। इन चार मन्दिरों के निर्माण से कनाडा में स्वामिनारायण सत्संग का प्रकाश विशेष रूप से फैल गया है। ◆

गुरुहरि प्रागट्य तीर्थ जबलपुर में परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की चित्रप्रतिमा की स्थापना संपन्न

मध्य प्रदेश में जबलपुर शहर प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज की प्राकट्य भूमि है। मूल चरोतर क्षेत्र में आणंद के मूल निवासी और व्यापार के लिए यहां बसे, श्री मणिभाई नारणभाई पटेल और डाहीबा की गोद से विनुभाई का जन्म 13-9-1933 को हुआ था।

इस प्रागट्यतीर्थ पर 20-8-2019 को बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर प्रतिष्ठित हुआ था। हाल ही में वहाँ गुरुहरि महंत स्वामी महाराज प्रतिमा स्थापना समारोह 46 संतों और 300 हरिभक्तों की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस तीन दिवसीय उत्सव के तत्वावधान में, ता. 11 सितंबर, 2021 को नर्मदा नदी के तट पर सत्संगसभा का आयोजन किया गया।

दूसरे दिन सभा में श्री जयदीपभाई स्वादिया व संगीतज्ञ युवकों ने भक्ति कीर्तन गाकर सभी को भक्ति में डुबो दिया।

13 सितंबर को परम पूज्य महंत स्वामी महाराज का 88वां जन्मदिन था। पूज्य भक्तिप्रियदास स्वामी के हाथों मुंबई में पूजित गुरुहरि की मूर्ति का प्रतिष्ठा समारोह मुंबई, पुणे, सांकरी और नागपुर के संतों और भक्तों की उपस्थिति में आयोजित किया गया था। ◆

श्रावण के पवित्र महीने में प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी पर्व के अवसर पर 'सद्गुण सागर प्रमुखस्वामी' के शीर्षक से आयोजित संत पारायण

पवित्र श्रवण मास भक्ति का एक अनूठा अवसर है। सनातन हिंदू संस्कृति में, भगवान के लिए अद्वितीय भक्ति की पेशकश करने के लिए यह एक गौरवशाली महीना है। इस महीने के दौरान, कई भक्त विभिन्न व्रत-तप-उपवास-कथावार्ता-भजन भक्ति के माध्यम से भगवान को भक्ति प्रसाद चढ़ाते हैं। इस भक्ति परंपरा को केंद्र में रखते हुए हर साल बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा श्रावण मास में संतपरायण का आयोजन किया जाता है।

इस वर्ष भी संस्था द्वारा 9 अगस्त से 6 सितंबर 2021 तक संतपारायण का आयोजन किया गया। चूंकि यह वर्ष ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का शताब्दी वर्ष है, उनके पदचिन्हों में भक्ति समर्पित 'सद्गुण सागर प्रमुखस्वामी' के केंद्रीय विचार के साथ, संस्थान के विद्वानों और वरिष्ठ संतों ने उनके जीवन का मूल्यांकन करने वाले विभिन्न विषयों पर हार्दिक कथा प्रवचनों का लाभ दिया। हरिभक्तों ने भी उत्सुकता से कथाओं का स्वाद चखा। कथा का लाभ लेने से पहले हरिभक्तों को क्षेत्र के संत निर्देशकों के निर्देशानुसार अपने घर बैठे ही पारायण पूजन का लाभ प्राप्त किया था। जीटीपीएल कथा चैनल, आस्था भजन चैनल एवं sabha.baps.org पर प्रसारित इस संतपरायण में संतों के मुख से प्रमुखस्वामी महाराज का प्रसारण प्रतिदिन शाम 8 बजे से 8-55 बजे तक और रविवार को शाम 5-30 से 7-00 बजे तक सोमवार से शनिवार तक लाखों भक्तों ने गुरुहरि की महिमा का श्रवण आनंद लिया था। ◆

गुजरात के नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल गांधीनगर स्थित अक्षरधाम की दर्शनयात्रा पर...

गुजरात के नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने 18-9-2021 को गांधीनगर में स्वामिनारायण अक्षरधाम मंदिर दर्शन करने आए थे। बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था की ओर से आनंदस्वरूपदास स्वामी, विश्वविहारीदास स्वामी और संतों ने माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने अक्षरधाम महामंदिर में भगवान श्रीस्वामिनारायण और गुणातीत गुरुओं को नमन किया और पुष्पांजलि अर्पित की। फिर उन्होंने श्रीनीलकंठवर्णी महाराज का अभिषेक किया और गुजरात के नागरिकों की समृद्धि और कल्याण के लिए प्रार्थना की। परम पूज्य महंत स्वामीजी महाराज की ओर से संतों ने मुख्यमंत्री को बधाई संदेश भेजा और सफल जनसेवा के लिए शुभकामनाएं दीं।

Swaminarayan Prakash Hindi, October-2021, Published on 10-10-2021, Printed & Posted at Ahmedabad, P.S.O. 10th on Every Month.
Regd No. GAMC-719/2021-2023, Valid up to 31-12-2023. RNI No. 43538/85.
Licensed to Post Without Perpayment No. PMG/NG/029/2021-2023, Valid up to 31-12-2023.

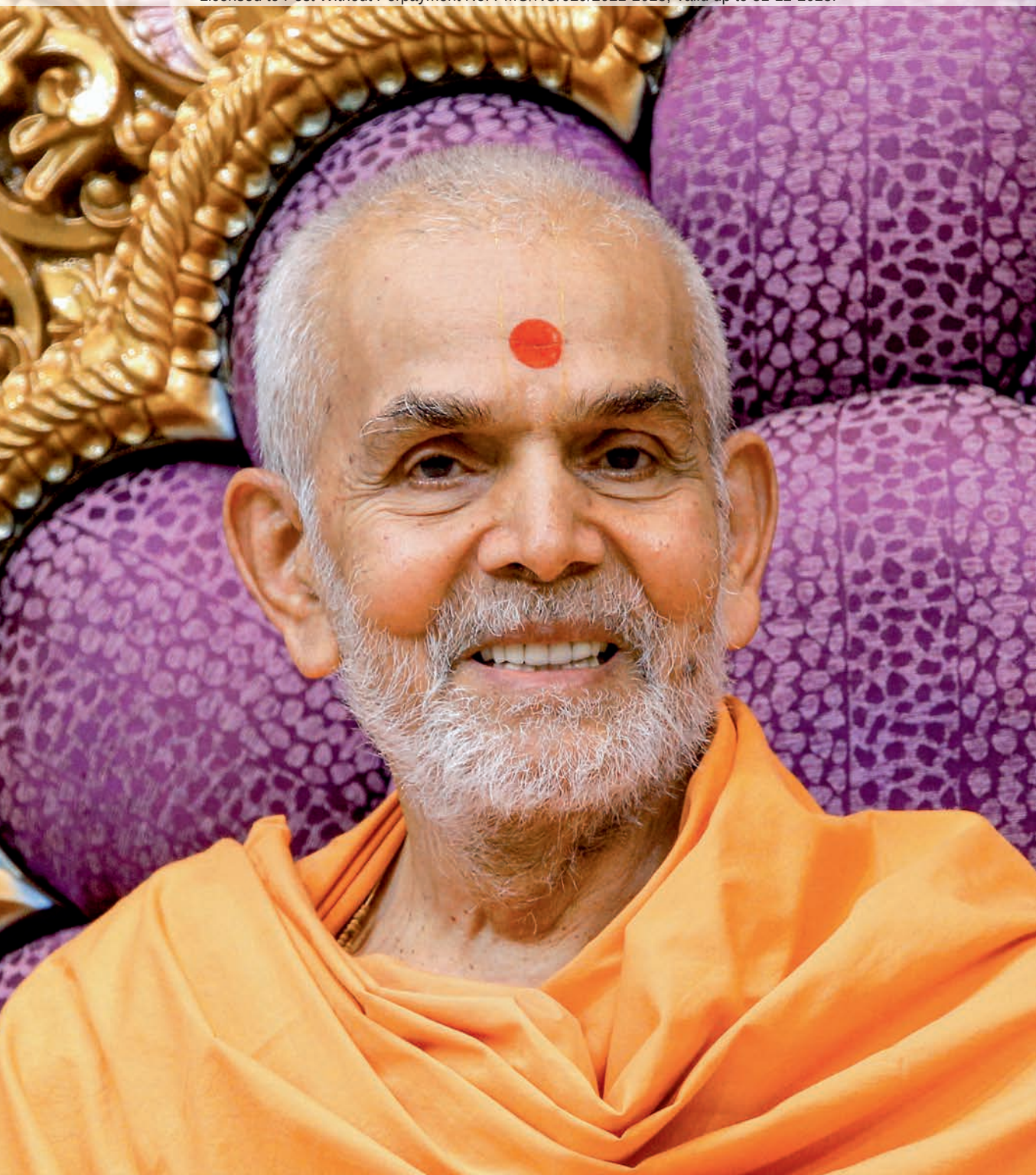

प्रगट गुरुहरि महंत स्वामीजी महाराज की ८८वीं जन्मजयंती पर उन्हें कोटि कोटि प्रणाम...

Printed and Published by Sadhu Swayamprakashdas on behalf of Swaminarayan Aksharpith and Printed at Swaminarayan Mudran Mandir, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004 and Published from Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004. Editor - Sadhu Swayamprakashdas